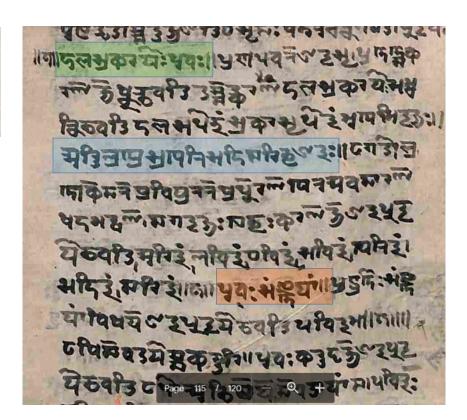
Title: Kashika Vritti





हाचद्वाघः।क्वाचदाद्वधचनम्। 🛊 ा चार ॥ क्विड्यचिप्रस्क्रायतस्तुक वि । वाक् । प्रच्छि । शब्दपार् । ात्र नार्थः । भ्राजादिसूत्रएव एहीत दिद्यत् । जमस् ॥ जुहोतेदींघेश्व । * ॥ दद्रम् ॥ ध्यायतेः संप्रसार

: 11 900 11

पमाने क्रिप प्रत्यवा भवति । विभू धमर्णयोगनारे यस्तिष्ठति स प्रति हलसूकरयोः पुवः ॥ १८३॥

पूरित पूर्विस्सामान्येन यहवाम्। ग्रस्माद्वातीः करवी कारके प्रन् त्यया भवति । तच्चेत्करखं इतसूक्षरयाख्यवा भवति । इतस्य पात्रम् । । करस्य पोत्रम् । मुखमुच्यते ॥

अत्तिल्धूमूखनसङ्चर इत्रः॥ १८४॥

च गता । लूज् इंदने । धू विधूनने । यू प्रेरणे । खनु ग्रवदारणे । घर विवे । चर गतिभद्यस्योः । इतेभ्यो धातुभ्यः करणे कारके दत्रप्रत्यया भवति । ारिबम्। त्रविचम्। धविचम्। सविचम्। स्निचम्। सहिचम्। चरिचम्॥

पुवः संज्ञायाम् ॥ १८५ ॥





(204 of 827)

◂ ▶ □ □

MY TOTAL ELECTRICAL STREET ラール マイル 10 mg 1 留叶产可以产品的自己是一直ELACES FIRST STATE COMPOSTALIST STATES 中华:事中中:美华中东东北京3月7万日 14·20/mc·华州中安战的河南南部城 自由PELES 在此面包含品面包含品面 可以后,由中央 REPORTS TO THE ESTATE OF THE PERSON 是所屬的可以是中华中国的中央 月延年3年,正是武司 2015 年6月2 到世界等等 関係のでから消費をされているできた AND SECURITIONS CONTROL OF THE PARTY OF THE 你们的我们是protoping of the 出年至中,但是一个工工工程的工程的工程的工程的工程的 **加入政治,但以**加州,但是加州的政治,在共和国企

FRE

हिंगह्माइन्ड्रह्मुस्थानिएय हि दिवनवह यस्माह नवह ७३८ उप स्थित है एक है है जिन में है है जिन में में प्रतिक किया क्षीत है विश्व शिवस्त्र है उने हिन्दू र्वितिह्वम्रात्रः त्रमकः काः क्राकः स्यःस्यकः धमादाना साना र वेथानव्युक्तमिक्ष्यानिक्ष्यानिक्ष्या विरुष्ठे थका प्राचित्र करो वसु न न त्यों 23:उनैवमस्कः धवस्थानक नुष्ट कुल्मः रिकास्याम् वामस्था विश्वविद्या स्थिनियी राधिः सिक्सिन्, भन्न ला है।। 53ेमु:10।15२**डिमार** 2स्ट्रिश्वित पर्वे हे स्वार्थिय है स्वार्थिय है स्वार्थिय स्वार्य स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्य स्वार्य स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्य बुल्लिक के का अध्यान के किया के मिल्लिक के मिलिक के मिल्लिक के मिल्लिक के मिल्लिक के मिल्लिक के मिल्लिक के मिल म् वन्त्रम्थः प्रति व विष्णि प्रमाना नसंदेश न अर्थिक भिक्षभागाणा संदेण

क

Q)

उस्मीरीकुरुद्विति है हिह्हापुर्हिभार बाउँ दवभउद्धि र लक्षक दिन सम्मन प्राच्चित्र सभः मभकः उभः उभक् ८० इन्हिक्स स्था विश्व विद्या से प्राप्त ने त बाउः सभी उभी सभामीनाभ द्वानं पिताना मवीमक्षिमभाषि विकिया : वामकः का भःक्ष्मकः सम्मान सम्मानकः।।सीनीव भ्रयपे इश्विष्ट्र नहवार मनीष्ट्रकः स्वेश्कः स्मीप्नमीन स्वेश्नमीनः नगरिं भी तिवाना या वन्त्र मेरियः।।व।। भावाण उक्वन्न ॥ मका रत्र व सुर्य थ वण वेश्वाच पाउक वाह बेहव शेष भाष ण्उक्यवज्ञे उद्यक्तान्त्र वर्षे प्रयोप ठवरी २३: एक्तरा व उमाने मनुरारक रिएनगुल्लाड्डाः एकाउत्पक्तन्त्रहाडे

मकारंथपा अस्य क्या किया है। रमञ्चनकाषिक एउँ उः भावण उक्ल विवर्गाया के अधिक के अधिक विवर्ग में अधिक विवर यपरण्डे विकरणध्यायण्य करित भुवना विमन भूमा विम्हन वामनेम रुलं मध् मलक्रे तुका भरका विद्वा भवना चामा मक्ता नस्या ने वका कर्गी वरुमाताक्यर ह्रिये उत्तरमा छिए देर् येत्रे येत्रेवलेयरउट्ट उनले के क्यांग नवज्ञ ध्रञ्चभ्रण रेद्य द्वाद्द्व १ ये रू वकंचणीयमुक्तं उद्याधिक ग्रापी उः गदीउवाना गर्हे उसे गर्हि रेअसे नि ष्ठिते ज जनन्या जा जिल्ला जिला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला क्या भारति यह यह महत्र मुहिल्ली संध् सपुः सपुवाना सध्उस सिपीउ भ ग्रेग्रव यश्यास्य अधिवनी छ नेप

事.

9

च उन्निभितिकं वितः वित्रवानां भीयर भाषानी उत्तर के अधिक किया में य पेए दुरः भयह स्व व व हव विश्व र उल्लेष संवेग में तिरियल मञ्च मिषेट् एर्रोचे ०० द्रश्य रूपे रास्य व्यक्तिवात्रवाति हा । हा उवात्र विर्योग्ध करिक्ष करता प्रश्निक्ष की क्रामभित्रहिशातास्यः त्रमद्वाः।। रगाः मद्र विवलिने तस्यये परेच बर्द दंढवित हगाः हगावकः हगानं भाग वला यहा मञ्जीन वेह ए कि यह स्वर् भः लारे अधिकिका शिवः तिते एश विकिल्हाल हराउः विक्वति विस रियण्डाय समार् है मिरिकें रुप्तो निर्धेष्टगुविष्ठिननिराः स्गिविः स्थित मा एक हा कि कि कि स्थापन देवत

श्रीतिक रावः॥काश्रिक मुन्दिक वि क्रियात मार्थित स्थान स्थान दाभाग कारेश्याः क्रथ्याः मार्चारका गभभितः गुल्मेकवित सम्मा कि क् द्राभा निक्रम या विक्र क्षेत्र भ धर्मे ये प उनसम्यः कृण्युक्र ह्यांण उपनिः नि म उप दिस्तिवा करेवा गुण्यतिवस्त भम्किम अहसापन वस्तु कुःवसिक ग्रान एकः परः मुस्ला अली नकविष्ठ प 23: नम विम असे अनी 23 थिन उनमा मये गहाउँ में विद्वा में विद्वा विद्वा व विश्व मियार कियारी चेया नियायो थ3वउने चपवर्षु मीर्ग एकक इक ये: प्रवक्ते कुष्य है ति एक व प्रथः मंभिर मंभिर वंभिर मभेपेर

事るり

भ्यायसम्बन्धक सम्बन्धकाः क्रिंगिके निक्रिक्षितः ज्ञानवर्गिकवेषव म्हायामयान्ये नयुग्या हाम तिम्य वर्षे र कि द्वार ने पार्य एवं में कि है के दूरी द स्मर्कि कुलकी कि शिक्षिय वितिष्ठ में विष्ठ कृषिय कि मिद्व गुणिक भीमक भक्ति उपिक उधिक गदीक वस्वकी भीपवसी विभंध माभिवशीविभश्यः क्रांटः क्रा भवित्र में के पाया कि हिस्से हैं। क्षीत्रामिषल भुरूप्सवल सन्धः थाः हु प्रचिग्नी हवी समन केव अनमा के हु से दु ।। दा । दु दू नर्सी दू थण्याचिवाग्राम्याची वृद्धानकारी मकारेयवस्यक्रियम् ग उभू पारः कू ने ल गुली वाठवित ग

ली के ति के प्राया के ति स्वाया निवादी सम्मान होनी है पा विश विविध उनक्षा अपने विकि विश्व क्षाव सव एपि के स्थित मिलिशिके उस्ति । इसि सिनि । विष बीच्न मार्गामा र साधियाना यं भविषिक्ष विषये विषये गट्ठाः नज्ञमधनयन जीः भेक्णाः विषे थरः इस्मिल गुलीय रविति ग्री स्थित भीधा भीधा कविष्ठ व भिन्न विद्वार विभिन्न निष्नित्व निष्नित मीद्विरिक्ष मितिरिक्षे व क्वा बन्नेगर केः उद्यानने अद्भिमं की विकासि दु मुख विषयम् विषया ।।। विषयम् विषयम् क्षित्रथा।येधभावस्त्रितित्रं के वक्षणा नं दक्र गरुनं गण दुनं थाः क्रुथ्यः

事

मलवन्द्रा स्टिस् मिस् मिस यिति माउ ग्रुभ करे उन्गर्क ग्र के विक्र उपमिश्विक मिन्न स्व महिल् मानपित कियो कि कि विश्व के किए कुछ अंवान विक्रिंश या भा। हा॥ एन्यम्भविष्मा। एका गनुभा धार्तिण दुन्भानि एनमे प्रधारः कृथ् उत्तः मुली वादविष्ठ विश्वादिष्ट विश्वादिष्ट नित्र कर्ने यु- व्यापन स्थित क्यः नेश्वन्ध्र लस्यकः रक्षेत्रक विकन्धः अभिनम् सिविनगाभः उभू गुलियुरुवपहित्तप्रतिभव्यक्षित्रे विस्थित सन्धित मिनिय द्वा सिहिन्द्र के सिल्ला के सिला के सिल्ला के सिल्ला के सिल्ला के सिल्ला के सिला के सिल मध्वेष्णाना नीड्स विकिति कि विक्रं क्षित्रं स्ट्रामिटा प्रति प्र

प्रान्हिकिक से देने श्वियागाउपस् वल तितिभक्ष स्वेदवैभिक्षवयेः एषं ध रेनिक्षण्य द्याः मिल्यानी स्वीरक यश्चिति यश्च स्वास्त्र अध्यास्त्र अध्यास्त्र स्वास्त्र स मियाः सधि वाना पवितर पवित्रा ना में उसा गर्ते कि इति हैं विश्वास मार्थे के विश्व कि वि वन्त्रीमक्चिप्एं अद्भिन्त्रील पण्डि उः पणि उत्तना प्रकृति उः प्रकृति ेवना प्से फिउः प्सीफिउवाना प्रोफ उः प्रमिष्णवाना जित्रं प्रवाः क्रीयी मीदिनं मिदिन मिक्मिका के जी मेरिउ।विस्रिकुवुः यथामीनाभाष वरवासिति विच्धायु रावासिक मेल्चेजील मिक्तिके भगः भगवा प्रभृष्णभूवाना विकासि विस्ता विस्ता नः श्वित्रवाना शिक्त रास्ट्री काष्ट्राया गर्

कः

4

म रहे हरे भवरकर स्ट भव रहे : एत ल दे पात्र उवन महोती भावः भावतान सरी वर्षाय त्या हो प्रविश्व अक्ष अस्ति वर्ष यमकार सन्द्रभाषा। भवः हम यभो। स्वितिश्विष्याभारभा क्षेत्रयो व उभा नाया निष्णु चार्या निविष्ठ भिष्ठाः मिरवना भर्तिमा भपितमीतिवा हमा क्राया निशिक्ता स्थापितं वहनी के द्राद्या हा का किया में विषय प्राध्य के विषय के वि मिलिने युत्रः मञ्जू जली हवी उद्योग कर्ते प्रकृत कमीर कियाया सामा भी सामिक हि रिउभवन इरिज्यवन स्टिन्टिंगि नपंसकेठावे का परितियः प्रितियन थक्षितः थक्षित्रका एकिन्सिक्स

ि कार्के वर् एटा अधिउभनेन भीक्ष्यभनेन

प्रिक्तिः प्रिक्ति उवानी प्रभिद्धः प्रभिति उक्न अक्रीन है जिस्पणया कि नि विषयभागाव।।ज्ञाक्रक्रिसः।।जाक्रमेव में रेस निष्ण यं पासेंग हा से कारी प्र क्रिनेः यक्तनवना एक करेमागढ्राः कमकेलिकः ननीयीयन बन्दिन क्लाः मञ्ज् भूममध्यक्रितिषुष् न्यानिया विषय स्वाप्तिया हिल्ली क द्रामनभूगक्रमं वन्न पर्टे उस्ते । उस्थाप्रचिया हमा हवार मह्था तस्यास्य व्यास्तिकाः भन्ने द्वार उक्तभेन व्यक्तिः द्वारा भी एक एस अवस्थान के स्थान श्रमः उपविषः उज्ययः तक्षयः वेत्रश्रमः प्रज्ञाकमयीत्रवंग्रानी प्रश्निय एक किला मिला मिला स्थाप किला मिला स्थाप

\$ 3·

प्रक्रितीयः यंति अहग्रिणी थः यत नह्यः करिउनेपः महूपमन्त्रिकि अमित्र का त्र विकास मार्था है सित्र मा मध्यभगरीतिकाउभा कर्रे ह सः हवितिलभाभना द कि भाल है उन धर्मकितः कम् कर्मा गरकता म सिमिण्डे सिक्मिक भिज्ञ मिष्ठ ही जिसा भना एकि भना भारित हैं भूषि विश्वन मकारः प्रकार हा हा है है। वार्रिकियार्ग्व नेभि विक्राध्व क्षित्रकार्य हेर्डिक भिष्ठिण के लीशिपकितिउनेपः मनेन्स्भः॥व॥ त्रियस्थिए सम्बद्धाः स्थापान है। भेषु भू कुमयायक भिर्म व व के वे मर्घ गित्रसंध्यम् उद्भुष्टित प्रमानिति प त्रिध्यानिक निकास निकास

णग्वन्यस्ययम् भट्रंभर्त्रन् उद्धाल अर्वेस भन्न मेरी प्रमान पदी प्का भंग उनन्ने भग्रानं भर्ग लम्भान्य जिल्ला नका र भाव उक वस्या अः पक्षाः ५ ५७ अः किवा कर्मा पर्वत्रभाजाउदलीमक् ये हे सुः रिभाग्ये मंत्रिक्तामा नियानामा निर्धिति तिने दिसामर्भातः तिस्यामरापिरः दिसे गाउनिम्हित कि विदिश्य है है । जिस्सी पा नवने छिके भनकारः क्रमण्याहिता तिमाधिमार वहेक सम्सामामामुन श्रिपपल्कानव्यम् एकश्राम् पा नवन्ध्रा है जा है जा है जा है जिंदी है कि ि अस प्रयवजा सभ्य रेचेय दक्ते गु भिनिप हिंदीरिक ग्रेमियोभ रः भीभरः स्योभरः इवेभरः मुभद्र

P.

9

कानिपः प्रयवस्वनम्भाः वाभुभीः एया ग्रम्भी गाँक ने थे उम्मिष्य के भूते नगंभरूपर्यवस्य स्वित्र गंग मिनप्रिकिद्रंभर क्रभारानं भर्ते वित्रामा ग्रमा वाधित हा चेल हमें न स्यो भ मटः भन्भायान् भन्तिप्ति। सन्वय् कि उभरः भगरः जिभित्रभग्मनं सिहनं भग्रानंपम्।।। ह।। ह भग्ने घे मे रे:।। ह भानिभेपपद्भ सभामवः भू मापान वस्परयाने कारी भन्ना गामें हवीर महम्णयः एनमएषः एरकथन्य में सहने स्वमहत्रे ज्या प्रलेषमा यात्रे उलः भुनत्वयः छल भूनेण्यित मुनीभू चित्रामा मिति विष्यंवदः पिष्ये मित्र वस्तिः शिववस्ति विकासः सन्ति पप्रानां भागभः मन्धः विविध मन्त्र

दः मोर् धिउद्ध १३ वर्षायु र भिन्धु आः जिल्ला यात्र उक्तीं भी हेरा ले सनेन भारा विभाग महाकाश भारता भ नंकारेशासर्यग्रम्भू भूषंकारम् न्याने भगमे हवीर सरकाः स्मामकाः भट्किरीर गामंक मभक्कारम मनेनभगमः॥हा। गिने,गिन्स्॥ गान मध्वित्रास्ट्रिस्स्यप्रधान्त्रात्र्वा गिनमग्रुपा भगमे विति तिभिक्षिनः म देशिनः गानिमान्न तिभमद्भविक्तिभ मर्गिनी अनिष्डिए कि ब्रितिकः ए देन में या का सार किया है स्थान भगभः यनवृष्य विकि निवानिति निगमः नथ्यं हिना हभान्य विकि उतिनः मानगृति विभिन्ननिनः मिसिभा अभिवासभा अचिएन विभागः

कु

क्षिणान किने एसि असिने एसिए भवाता उपभक्तमम्द्रेन्द्रः भएक्ष्रमुनिः।। उपभग्निम् जुन्हचा भूपावर्भण नि धारिम पर कड़कार द्वामकारी मभक्षे भग्छ पार्या रहा दि है। प निम्बर्ग नेवन्धः नेवन्धः नेवन्धः भष्य प्रकृष्ठिष्ठाना पाषि उपन्धः विप्नकेः उध्यमनिकिक वनन्तः नभग है भिरिकि भनहः मनहः पानी पन्धमि विक्रिके उधनकनभाषाणा कर् क्षिण्यः।। गरिमक्ष भू तर्र्यया ने कर्णेभ नभगाभेवाहवीत गरि क्वाः गरियाःग रिमग्रिम ने में मिर्म होत्य होत्य हे मिटिम् द्रितिकि मिट्रमाद्रााता॥ प्रकारकेयं भिद्यम् द्वाप्रकारिक 感 पाउने प्रकारः म्यक्य प्रमाधिक प्रकार

लाक किर्माक किर्माक किर्माक के में उनेपःण रहनः उपप्रम्भागमूनिप 23 मार्मयभः यथा-वामयक्ति मना क्रीयक्षक वाक्षक अध्यान मानिया है । विषत्रथः उपभ-धिष्यग्यिष्ण्या उपम् प्रमान्धः समग्गम्नविष्टाः।।। ण हे भे तुः पान स्त्राहिभा ते स्वाहिभा हे स्व नवज्ञ ५२ वधन उक्र गाम हिष्ठि मधि किश स्थिति उवानाम । पी विविधिति धर्म मन्त्रकागमः यु रहामा पुप्रचः मक्का क्येः प्रवक्ते हु उस्मार भेकिष्वरुगाः हैयपार्भ उस्थि स्त्रीय न्याना मुद्वतः हूयपा पानवह भ्रेग्बना। हकारेकारेह परः हार्ट ययकारा भागापुर्विभाग्यम् तुं उर्वेश

S.S

9

मिहन्यत कुन्द्र : हड रिह्ट किया ह गमः ग्रमः भग्वस्वर्धे स्वा स्वम् नार उवन्दराव मुक्जि भूल मव सं प्रवः प्रमुखन है हिः भगवस्वारे स्वा निम्मवस्मः तर देकाममन्से मिय अभेवारित अर्थ मुल्म स्थानिय कुलिनित्र अन्य स्वीति में ये भग्यः गुलः तर्राष्ट्रीके ये घर वाना ५ भवः उयन्य स्पिवमिष्ठिभेष नम्रुकितातात्वक्ताता।।। भिक्तःमह्या रिक्सच किक्तच अन्यः मक्ति पर तर करार भस्य किति अपि :दम हिंदी :प्रतः अप गुलः भागवद्यवाची नामागीन मुम्त्रे। नित्रां प्रथमा नित्रां विका ाः भारतक्वीः म्युवितिभण्डे रुष्ट्रिको

उम्बे कि स्योगेगभीत्र गायावेने उपः कवन इहिर व्राप्त सम् यः सहैन यु उत्स्थ उभाग् स्थ रेष्ट्रकेवनभूवकाभूनेपेठवीर याप किया मीमें वित्रवाना मिग्मकितिकियां प करण्येसे ३५.५७: क्या म ट्रेडेंट्रिकेक अस्ति हिंद्रिक कार्य स्टिंड नेप: जरें भे हैं: महरूका हर्का म विध्वः महंहरूरिहरू भीवना अंक ग्रंभ स्टाया ३: या भर्भट् त्रनिपः स थे उत्थिक किया है विश्व किया है या मणक ग्रन्थियाउँ भनचकारमुप्रकारी यक्रमवक्रम्य निधिहवी वक्रम्यति उँ शक्ति पर कुरः कुरक्या सुरः कुर वाना इत्यीम-क्रुयीथि-इ इत्व दुनि र्भीक्षी ग्री क रुवः विकियान् विभिवान।

10000

0.

हिवृद्धी-विवात-स्वीकनविति केंद्राः धारकावस्वादिन व्योग रेनिरीन्छवः एकभग्राजीय भीडी लंहवरी यानेन ही ने थः हुन्ने कि अधिर स्वीवर स्वीक् ध्राप् ध्रीर प्रवहायपा राधिने विभिन्ने क्रीजूरा। ता निष्ठ धीनः।।निष्ठ घे घर ल जिल्ला के प्रमाणित के प्रमाण वीउ थाकिउः पाकिउताना पमना पू पुत्रः यमन्यूष्ठानाराना के करन एटा स्वत्रकाराज्येयः विषिष्ठिति प मधिम जनाके भूरीचित्रः भूरीचि उक्नागत्गानाचिद्ध एउ रेपान्य नित्र कर में नित्र प्रमानित निर्धनियमहबार भारयानः गाड यानः भारतं गरग्रेन

प्रमा यास्यामिथः उस्सार्थः प्रमाण गनिभि उकः प्रचिति प्रि भुनिकी छे अनिवस्थान्य पण गण्डा कराः म विपिट गरिस्प्रीरनः जावित्रः थाविद्धः चल-पायनाष्ट्रियम न्य भाषात्रेष्रक्रमा विद्विः स्व एवनेने पति च ० वसन द्वारा मनादिष्ठः गुन्तः भीद्रयोष्टः भीद रं एता सम्बिष्णीत गरिह सुयुः भक्ष मनः भविष्ठ वायां ग्राष्ठ्रविष्ठ विभागिगित भीति गिनिति भिति सम्पाय स्थाप्त स्थापित ने: भुनगमिक मगमि होना भूनि

कः नः भुरगम्हित्त विश्व श्रेत श्रेत करा हिता भूति वः क्षिप्रिचित्र यहिंद्विति विश्व निर्माणि। विश्व प्रिचित्र विश्व स्थानि विश्व स्थानि । विश्व विश्व प्रत्य स्थानि । स्थिति । विश्व विश्व प्रत्य स्थानि । स्थिति । विश्व विश्व प्रत्य स्थानि । स्थिति ।

ध्मवय्विगलय् मभउ-दे गवित्र मीयः भारतकारे स्थः गलकाशे स्टिन पर हे ज्ञा मस्य निषः प्रिपे ते रुष्या मन्त्रभ्यः मयान्य भवर छिक्कि विमाद विकर विमाने विकाने प्रयूष्ट एना जीय व द्वी हों व प क्षित्रनेपः यथी विकि मध्य ते स मीए अक्टि उनिधः।।वा। भीगरु विकारी कामा। भीका द्वारी के भीका दि भिने रिक्षिले का जीने का भागाय डि धिवतेश्वर भूति एए जीनं स्विधियाँ जी देश ये भाग परिभय प्रय भी निरिं ने भिला भू की राक्षि ध्या 0 35 प्रचेश्वया यहेन देश द्राप्तीनं वदा थ्रम्य थ्रम्य प्राच प्राम्य थ्यम्

是是

प्रभुय स्वभाय विदय ग्राजायला देला । जे या ज पा जिला अन्भाण । भेलेथः केत्रेया गाला-धाधाव पुः धयातः गदाताः छएका थ्यव विध्वश्रूष्यथा स केय परश्चिपयार भी ज्ञानिक भी कीय।।ता विषु यं मा विषु यं भा भं केरी चे ठवति की नः की नया न की याजिया गर्जि है ते हिंदिन भारति हैं। न्वन्यत्यः के स्तारा कि हेन उभी।वि।। भद्धः भद्गा अद्योवस् विरस् हणं की सहस्मेहवरी कि उःकी उयाना भद्व याज्यस्य गर्वे के द्वारिक हित्र वर्त्रः विश्वयंकि स्टितिश यातुः वृष्ट्यनियणीयनेयः॥ते॥ धार्या भारते। श्रयः यी भारत।

\$ ·

03

न व व में छ ए ची च का विकास के किए जे पार अप्रभव्यं अग्रिमान्ति धानकाष्ट्रामा न प्राचित्र न स्थानिक हैं दिविनपुत्रमा सहस्यों अर्थ में में नेजिशाजा संग्रह की दिल्येश क्वी उद्विष्टि । क्या के मार्थ में नि पक्षा ३ स इ. ५ २ व भ र संध्या र सं विपश्चे महोत्री ने महिला क्षा विश्वति विश्वति । किंग्राच्या गुः गर्गिषः स्थितः मन्द्र नेयुक्तिक द्वारा हाथ स्था संयंगाया। वेस् महसंया अव िट स्प्युव है निश्व या पर ने से प्रभाग रे ठवित प्रभीतः ध्रमीतवाना मभन्नेमा।।।।

म्बप्पनभाज्ञियः सः॥म्बस्वसुने धान है। धान के परिष्य के प्राप्त क्षयंग्यानं अधाननं द्वीतं भागं मानं घंडः श्रिथ्वे जीविश्व ेरिया मनेनभंध धववप्रीयः भी विशेष्ट्रिक्षिता विशेष्ट्रिक्ष नभावयिगिति सुनिद्धवस्तुःग अस्त्रियाहार्षणाः हर्यः या स्कूल गणियस्य निष्णं या वर्षे संध्यावलंडवित ध्रामीयः धरिमीनवाना भाग्नं अववज्ञानाप्य धानभामा ने वस्त्र माना माना है वस्त्र भाग मिक्षिक है ग्रह पण्या मिष्ठ यापार्श्य मध्मार्ग वाह्यति स्रिक ०७ मीनः मिन्याना यिक्सानः स िस्तियां सन्नवि भाग स्थान SOUTH BUILD

do.

लितिया ने अगानियान विद्याला वाना अस्त स्वयंद्रभे सार्यद्रभ था अध्यान के प्रभाग नहवा वाद यह कियोग्ड स्वयोग्ड स्थाप प्राप प्रदान प्राप्त भन्न करने लिए वारा महाविष्ट वारामा 2 र या १ पार्य मं प्रमान न न न न यहिरुत्युभा प्रशुवाता। भ पिहिता। अयो हिपके हेका याधारे अंध् अर्गे व्यवकि अव ल निष्ठः धापुः भवीय भंगुः यथ िवीय परिकृष नाने नव भाग् उ मीयभ उपाणा। उद्धाना अभा ग्रां प्रभाने भरे में ये पापित S. S. S. C. अफ्राःलीयः अफ्रयाभिष्ठित 利雷:長月至日本河北西

THE PERSON

रिविष्ठ ने वे के यह स्थित वामीत रियम उरम्पिति से अध्यानिति या महिक्तारीयः व्याप्ति वः रणवेषाः भेष्रभागन्त्र भी कथा प्री कि विपयं अहं विप्रीति विषा सिव की दिन में निवासी है। यंमभेपकं या मृद्धिम गुल्मा यं म भाउंश्वाउन धाराया होता है वाउ की प्रकार व गुल्य पुरुष्त परिष् मानाधाना ध्माधी धाग्धी क्षिया सन्निकाः भने जा देशिश भूतः मात्रः मात्रवाना स्टिनित भागरजितिका प्रतिक्रिक्सभूज मगुलक्षिममुगादााकिःस्ट प्रममा कक्पवक्रायद्वा भ ह नाउल्टिश्याद ने क्याः ते

or or

पृष्टिमार्गिन विम्न समारे एक अन्त नप्रच कि विश्व हुआ में विल्लिक क्रण उरे गो विक्रितिया मनेनकेश मः विभिग्र हार्नियः महार महाकी उपिया पृष्ट उल्प्या ह उः पुत्रवाना की शिक्षागाउँ विकास धेयम यहा विमः प्रश्नः याति विद्वारी नेस् माउग्रह्मक्षे कि हो वेदहें हु थे क्राध्मद्विभागु हवन प्रवक्राप भृतिकितः प्राण्या रहिता प्राण्या ्र हिं सेप्साण्यकावः। सेम विष् उत्र भाजन एक कि श्वास भाजितिभना मनेनवकारस् ज्ञालागुलः।।वा।।।। सिक्षिमविद्व विद्वान्ययणया स्था। सिवगिर्भिषणयेः यवर भवनवन ए रहेते कि द्वार में भूभे प्रयोगक रचे

· TOS

1

प्रधानम्याम्य मुस्ति । स्वाप्ति । क्रिक्स धेमिन मधिन भूति अः प्रति जिला अनेन वका में पण पश्च केल " यह यन्ने भूतः स्वाया कि अधिः प्रशिः उतिः नदीसि छिष् कि छवः धेमम् भूभा भने कारा । लंश राज्या न्यवाउँ विकिथम् दिना यन्तेव अस्ट्रिक्श व भागीत्व प्रशाला रहे एगा रहे राज्याहर ग्वकानि क्रेनिपनीयो हव उस्ति प्र एगुल्पेक्रममधर द्वः प्रः किक्न प्रमिद्धिमार्च प्रकेश- प्राचित्रमा मनेनकक्रवक्राचिनेपः एक्ती उनेमन्दः अतः मक्तिभाग ३३ तितः १९६ वृत्ये सम्बद्धितः कक् गवकार्य निर्धाद गानिक्ष जैनल

कि वर

शिरवंकितिविक्तियः प्रप्राप्त अवाति।।वनिष्ठ के स्थिति।।वनिष्ठ विष्णभागा ३:॥वन्य भारती उनि भारत राजी में भारत के प्राप्ति में ए यण हेने वृष्टान्य गुल्य पंत्र से मध्य र्वायनिय स्वति तिथा कार्या क न्द्रविद्याविष्ठः सिर्येग्डिः ध्यथवे द्वी लजीजी करावः स्वरूपंस्वीमेथल्याः विक्रिपञ्च हरेन थेय नेथः सुक्र श्रम् कारः ३३: ३३वना कारका क्रावाम क्रिल्मियं रहेर्मा निश्च कार देश कार्य कार मिला के उठा मान यमभन्थः मुकार्थम का अः प्रीषिद्व एयद्या गाः गाः भागा क्रेनी श्रेष्ठ धरुकाना १३: १३कान 中国1911年13、中国1911年191

यक्षीय गर्जिता निष्ठ केल्या 93: 4是外面小田里的一种 मगुलिकं गनुगनु यनुगुतारिक विधिनावनित्र किथी विभिन्न विद्विषंगभनेपेठग्रियाप्य के देशभार राज्य राजिय देश क्रायमा पंक्रभनियन उपित्रे कि उभित्रः भारता राभः॥ मभ ३ १ छाउँ द्रियथा थे मान भतेपेंडवित्र विकत्तित यून्य प्राप्त उत्पार अत्याम प्रमान है अपा ह नैन्यंकान्यः कार्नेभुतः ॥काषामा म् निकित्रीयन्न॥वनिष्ठित्रेने स्टिस् भिद्धें के कि हैं ये प्रमानित करिता वितः वितः दिनः दिन्न वित्राम् भक्षा है। उन्ने प्रतिभाजनी के कि 24 भनिपर पंगमने प्रकार करता

P

विद्या असी उथाण व लाला प्राप्ता भारती। मिल्डीशी अधिवस्था भागपा भेगम नेपहेर्वा नायः एए उनेन वृद्धिन ाद्याः प्रमाना सन्ने रेपानु भने भागवा भेड्डाकामड तर्मिड्या कर उन्हेल मियर येक्पनिय हर्वीर स्वेत रावः विषाः भूगः प्यामा अने नेननेपः नने पहार स्पानितायः प्रभः नित्र क्षेत्रहेर् विद्यान्य के विद्यान विकार अधिक कि भी के विकास 33: गाद्यान्त्र हु वकालयः गान्द्र म गर्नेट्रभू के विकालक कि कि प्रदेश मि थर ध्रमनियह विश्व स्मने गराः हा विष्णाना रहा दे जैन र गः॥ स्व दे विष् डिप्पाना यनिय ननियः गरीः करा विविधाः।।वाष्ट्रीष्ट्रिक्षिण्याः प्र

田的

मानविधे कारि बुधियानि मार्थ गलकः गन्ननं विन्यभस्य सिनिनिन विता गगी व्यक्तिमित्रभाषा ननिथः मभूपिठित्रसी यशाना है हः भूगिविता विदिवस् विद्युप्ति भनेपेक्डवीउ उति उस दिय उघेपर वहलं कंडलभा वद् वंदकः युल्युल्ल स्राह्मा बर्तिकरित्रक्रमाभागुः स्तिक स्त्रे के हिपक वकार तामः उभी केनेपः भाग्यीकं यं होते यात लितिकं रेनिउं वयं सक्छ वेतुः एली।दा। यभिभाव अनिगर्भ क्रिं।।यभु उ-भन क्षेत्र भनस्यवेषन्य उनिष्मुणं गर्थ गरे प्रसंदित्य प्रमुभने पेकवरित भेयत्र महिभत्रा परीत्रत्रा एकतात्रा भे

9

यहित सिर्वा रिहर्गा रहमतीह तिहा विभा यमभनियः करे भेर विद्या रिधि हों है जिस्सी है जिस्सी कि जिस्सी इउक्र अन्य अन्य स्थान उनेगः विलिनिकथर पेक्सभस्य हवाँ निगम किए श्रीवशायां म् रमय-विनम-विद्वामा नि भनि एकिति विट् एक विष्यु । अनेन धेमभभू है वीन मिरिक्र म ग्वाच विभाजिय भिन्निष्विष न्याना नियाना किया किया नियान अविराज्या।।।।वन्य-वर्धाः राजीधः त्रथायामभश्यहें हुवति वृद्धिः त्याः णाउवाची भाउः भागवाची २३:२३ विसं पिर्जे भा विस्ति से के के विस एया अध्यात्र हे कि स्थापित स्यापित स्थापित स्यापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्याप स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थाप

जीहरूके जिल्हें निर्मा है। विषित्रिकि एकिउगाह्याचिवगावित्र मु-विवर्ध किर्देशकान्य किराज्या मुल्यक्त क्षेप्रविधा भूषय त्राच प्रव प्राच्य प्राच्य थवः द्वायां स्रोत्याय उत्तर भा या भरते हवते हत्ये मगुलिक इ.ती.नाथा मध्य अंडिक हे आप भूरभाजान करवें जाना र विक उन्दर्भा भट्ट अस्तः भाग उत्राथिता अधिता क्षांत्री है े हेरीका अरुका स्था में भी किया रवियन अर्डेडवीर दि है एएएन विके दर्य छदावां में में में माना है। हैश्री मन्त्रें र्यानिय मियान भा सारा-मेरा ध्रा-पिया भगना उठा

\$

63.

ग्रीप्रविधारित्र से वे व्यक्ति हैं है रें व दक्ष करिता में सामा ण यजीजी देश थे कि उन्हों का वार्या क विभित्रः मिस्तव्यानी भित्रः भित्रवानी िकाः विक्रिक्यामा क्षीय उसा स्तिभा यवभी घडे भा यव स्टिश्म विभी देश भारतम रिक्षितमा के केवर्ड भारति देनरके भक्तः सन्नदे कि इ भिक्षा भिक्ष किर राजा वास्त्री। के केरने 33काल कानचारगुल कामिय रेघिया विद्वं हवी किउ: किउवनी मि३: मिउवनाळ ७३:क उवारी मा ३:सा अवाची का याउँ भी करिमी सायाउँ भी स्रिभाइर्डे वर्डे ।।।। इंद्रिस्था युक्का २८२५ वक्तरस्थ, यन् भूड यथरित के संख्या विदितः विदित्र स्वाप

विवयं भारति वास्त्र में देव विवयं रिशिक्षेणाः जीउयाना विल्लामभीति।।वा मरदलिहरूस्यामरग-दलिन स्वेत क्षास् उक्राईव १०० ५३ विथर अव स्वीत्र मुनिः कृति येषवरे स्वतीती ठठवः युनेन भे दे मन्याभाने विशि रिक्रीयः प्रुतः हितां प्राः मि क्रिक्तिः उट रीकि मिरः हिनाः।।।।। 上去口川和州多西河西了青雪河沙 उक्रमणवगुल प्रश्येपाँ सम्ह के ठ वित्र मृत्रः स्टिन स्त्री मी देश मुख्या क्षियत्र हा ३: ६३ वाना क्षीयत्रेश्वा मिरिसा मध्ये भाषि विशेषा कुरुवारे महास्त्रीहर्त्य क्षिरी रुव मुहूर अपे कथाकैया सण्डातिकेका की उदान की बाउँ भा वया जिस के उत्तर है।। जा।

क-

00

भूम्यथभाग्यः।। भगम्धभाग्यः क्षा कराक कि विकास के दिले हैं से कि विकास कि व मावगुरूप्रवेष वर्षे महस्पुरूप्रे भ्रुकना पनी उः धनी उत्तरा भ्राम्य प्रक्रिश्रा धारातीयाँ श्रा धरिकारिश्रा स्वित्रकृत्यः मध्यात्र स्वापित्र वित्र वित्र स्व सीयः भगार्दे नियः नियुक्तामाह्या। यात्राम द्रद्धिः॥ स्टब्स्ट सम्मिन ग्रम्मेडवर्शम्य अर ज्यापार्था त्का अस्ति : द में स्ति । स्ति । केमा मीत्रिया सन्नम्हिः भार्षेत्रीत्रम्णः विद्यीय व्यक्ति विद्या णान ने यो भेश। पामिम नियर मह यभि क्ट्रमुह्वप्रियक्यास्य अस्त्रास्य हुउ माउरिक्तिथाना विध्याभः उपभने के भिट्टेबा नकाः इंद्रिशालारे रे वर्डे भिद्या

. उ. इ. व. च र देशे पट्यो निष्ठ भेड़े हरा ३: विश्वाद्वार्येद्वार्येद्वार्येक्ष्ये कीनःकीन्यगार्था-एएन्स्गानभने वेः गविष्टितिवर्वे वर्वे वर्वे ती प्रक्रवः॥द्या रूभभक्तकाने के प्राप्त मान्य में किया महार रःभक्कणन्यभूयविव्यभंद्रक्षिक्य प्तर्भका गुः प्रवेष ये भगति है जिवे पद्मितिन्या एउन्हिवाय विः विवान कर करें मार्थित साम कि हुई से क्रेक्कित्रमाना वन्त्र सुर्विभेतः श्रीः भवकार्यः पनिश्वविक्रि भवेद्धयं उठेक्क्ट्य भागवेद्ध रेके मर्घर प्रचारी कि होने काला णा ।। या कि किये पारि उन्ने से स्टार् ननर्भिष्टाभः गुण्डिः परेहत नीति किउव

विकानक्ष्रिक द्राप्त हा द्राप्त मार्थिक विकानक्ष्रिक स्थाप्त ०३।५६ में भने जिन्न के अपनि हैं ते ति हैं मार्य मार्य के दिन्ती के स्वर्धित के स でいかいからなるであるでいるいろ य् रभयेजा। उद्युप्यस्य नभये अयो प्रिम विठितिके निइंडिकी उसुरिः श्रीवर्षि ट्र उत्थक वः॥वा।उभुवन अभ्याः॥उभूवन अउपपद्भुजेनकसूट्यान्नेनभड्भागभी ठवरि वेदः कथ्रनद्वः गंध्यारिक्थनंत क्रिस्त्रिते स्वाम्य स नश्येननभाग मभाउविकानमञ्चा भ्यान दे उत्तरक स्टिक्स मा भा अहताः क ने हे के हे कुनः कनभगष्य ने यहा र्वेष्ट्रिया सम्ब्रिति विष्ट्रिया सम्बर्धि विभवभग्रविःक्षली न्यार्गादायुरी

मदीनेव ॥ इ.जी बायभू यह हैति हुए इस क्षिणियावज्ञीय दूपयस्ति विशेषा नुनण उम्भद्रप्रदेशभाभी करताः भ नर्पे प्रसं के दे अन्तर् ने प्रदेश अवस्थित नक्नक संवृद्ध वं जवित्र मण्यार्थं अयु यं मध्या मण्डान्य मण्डान्य मिथा वर्षा तिन्ना अरः अर अर्थः प्रवर्ति अभूषः स् थि:कोकिशावना किया हिला किया है। ग्रिशिहररण्डिए हिर्धिण वृद्धान्त्रम् अभुवन्द्रहाँ विद्या है कि विद्या है कि विद्या कि व इक्ष्मिकार हुन इस्वराजी कराति है भियागाणि भर्पे भिष्ठिन रूपः प्रयः भय चण्केच्याउपह्नाभूयकः भीत्यहव्यी 3िरियउँ मियं भियं दिश्ये दिश्ये काल्याः तम् इः भेभद्रेये निरुषद्वा नर् नणकें हवरी हु । वृत्र के उद्दे ने उद्दे ।

30

विक्रियजी विविद्याः विक्रियः विक्रियकः कित्तर कित्रकः वर्षः क्रम्यकः भः अत णगुलः स्वभाउपकानिके नेहः कार्या अनः उथि। जैने धमन द्रुष्णिक धन मः भेरवहिह दिधनग्रवहरूउभभाउप्रि विवयर अनुभक्ति विश्वास्त्र विवयस्त्र विवयस्त विवयस्त्र विवयस्त विवयस्त्र विवयस्त विवयस्त्र विवयस्त विवयस्त विवयस्त्र विवयस्त्र विवयस्त व क्रियायान विश्वति मिश्यो किया एग्ड भियोत्ति स्वातः स्थित् कुलिए विष्यायामः भारिष्ट्वेतिरंताव देत्रवाः ८ गडः ध्योद्रिः जना उरेयः सन्यस्थि या भाष्य के कि विभि उविह धया भीतकान्त्रात्रकात्रकात्रकात्रकाति रायकः रूपा स्याधिय विकास किमाः अल्पेन्याण गुन्तः असि भारितः व धिम्इभीतियः प्रमास युगिसिः सु

を変

युध्ययः पक्तिः भवर्ष्ट्रस्थीनपः र भूषः भेषवरेष्ट्रकत्री जी कवशाजा।)सूत्रीयोगण्डे भरूतीयोग्रेये रेवे रहे । के मार्थित के स्टियर करियर के प्रियं 2 कुणना कुल कि कि का मान्य कि के में ब्रेनक अर्थे के इंस्कालियें क्रिक्व के तः के रे डिंग्से दिः के राजीय के दि हिंक र व श्रम्हः॥भगनुद्वादिष्ट्वेहवति द्व नतं ५वनीयंनवनीयं ए ठिकाह्रेयः ाक्षेत्रहरू हो अवविद्या विश्व क्षेत्रहरू मवावाभरुपेलपक्ते उद्यानीयोच्या : रुविउर्रेडवनीयं निवउर्वृतवनीयनी।।पा मिक्भिद्रिपवनगुः आपन्तः । यद्भः पृष्ट पवनानु मुण्डेदभ्रये विविध सहस हि पवतानु जार थे नहें गरे रूपभाः कुन्रहार नार्थ सन्नयः॥कार्यस्त्रीजा।

33

नकरनुष्ट्राः प्रत्यकार्ण्यस्य भुउवहर्वा उच्चेत्रके निक्स संदेश पूर्व क्रिकार्थः भूवनयः ते अस्तर्भः विवे विवे ॥तावर्षण्य हार्वा हिल्ला हिल्ल यांन भिक्तियां के विषय भति। युन्य गर्म भद्र दृष्ट सारा-गम् १ गार्थन्थ त्राभन् । उपभक्त वेभिष्य ४ २ पे विषि हे गद् गर् यत्रपभनिकितियारे पुभाई विकार प्राप्ते एवक कृष्ट्रनाम्नाता मारिक के निष्या मारिक कर में दिया द्वथ्रयेह्वी मण्डे ग्रावडे भूल ला हवा समदः व्यास्य मानिक कुम्पद्गान्यापं द्वाप् वस्वराष्ट्रिय -75° गहा निराजे विशिष्ट सवस्वर राजित 23 यव भहें भिर्यगृह्य मिर्ग्येष्ठे वित्रिः सप्तिवतः पटः क्षत्रनः ति

इसर्व ३३: धन ३६५३विविप २३ भ व्यवशास्त्र मार्ग महिला मार्ग महिला वस्य स्वाध्य देवितिया ३ देवित्र भरता निष्मा केला केला है से देश के प्राप्त केला है से देश हैं प्राप्त केला है से देश हैं से देश हैं से देश हैं यव रहवा अंभूमा भाषिकारि । महेरव क्रकर क्रींमर बाना गुला क्रम मर्गद्युर्गितपार्त्र वर मर कला यम् इसिर्याण्डेसे ३:। क्ट्रार्य कान्य में वह भिरित्तपार ने वह म क्एं उहुँ उन्नेनियिए पूर्विप्रवित पार्ते काल कि विकेश कर के विषय नीयभिर्भः।।त्यामदःभाभित्रम्यः।। कु स्दरितिषा २३ वदः भागी सद d'o वे मः उद्रः भून्याका।उपभद्क 33 रिष्प्रणने॥ उपभद्दि विश्वपार्

प्राचित्र महामू न कार्य प्रकार कार्य क्रिया शृजा उपभद्गोः द्रभजी हुउ: उपयुक्त भागवेष दुर्व वर्ष देवितिय दुरे उ तमत्यक्र निष्णाया सद्भरेशा सर दिलिविनपार ज नित्र है विष्ट श्रापति । - दहल्ड्यद्विभाद्याम् मनावभाग यत्रीम स्थापार्य्य स्थापार्ये वर्षर्या थार्डे सहस्थाना । नामिक स्टेश्वान भिगविक्तिक्ति निर्देश प्रमानिक विकास वह देखी हैं। अध्य हैं भटे हें है पि श्रीप वसित्रभंध नामात्रक कार्यान प्रभाग र्ने अधिक स्वास्त्राह्माह्माह्म के विक्र भउ या भिरुभू नार्षिप्यम सर्भने भिर र्याटकीर कन निर्मार्य राष्ट्रकार रिकार्य 2विद्रमञ्जारे दुरुक्त घेगाः सुरुक्त वंगा 海是 प्य के सम्मातिक के सम्मान कि प्रकृ मुराहः।।दा।

दन्युका दनिहें प्रश्निम्थ्रेपपद्ध सन्प्र नेभी हैं है जी उक्क मुनुष्टमः ब्राह्म है विकेत देशमध्यः संगीतिकं भागः भाषा द स्णात् भूदत्वितिषात् दत्रेश्वातिश्वाः य अवभागिक किल्या ना निर्मा किल्या में में गरंहराता कमाव-माल मुन्द्र प्रशी र नाग बासनाव-विकास -ग्राप्त है पाड्यो ए उट्टे सम्हः ए भः स्टेखा शाम करः स क्रान्त्र मुद्रान्त्र हे । स्वार्थिय स्वार्य स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्य स्व ं ण्रेसेनः सम्मितिहित्रे धनःहृपी भी उनवर कवस्का विश्वनिकामा । मवस्भुरः नग्रम्वस्भारत्र्णान्यात्रा द्याण हो है ति वा है विषय है। हर्गा सहुविषां गाउं है अप मार्चे का मीदिंगा कार्त्र के कार्य कर के कार्य कर के कार्य कर टक्षणकिति हेर् मुन्यामा मिन्न्य सर्

\$ 35 SE

हर्य निक भदीतिकः चर्तः भून गुन्देशः विशः विशः हुम ने हु जाना हुए। म ने हु के विधव हु थी ठवितिनीयिशः सभावयो हिर्म भितिया राष्ट्रवयः अभिक्षानियारित्र्या भिया करवेम वकु उ हरणका ग्रेडिश प्राहणा।। मिष्यितेष्ट्रं प्रभाव हें दे त्राप्तिक विश्वापति मार्थिय की चुरीप्रायेष संगतिप्रसंग भान्नी।यह प्रकृषिष्ट्रा यह प्रकृषि कारें हैं पाठवीर ध्राहें प्रमें प्रभावभावः निभिन्ने सहिवगृहः सल्तरम्हः उद्य कुउर्गाना केरी पहुंक न गुप्ति ।।। वि मक्रियम्भी नाथ- येलय- मुहे रुद्वेषेत यद्याने के विश्व विष्य विश्व व कः विध्यः भन्नःकनुभन्नचेःविभिन्न यः विषष्टः विषय्भद्धं सम्बन्धः । देशक Sur-पिलहेवा। हामा ३ स सम्बन्ध प्रापा से

क्षेत्रपायान्त्र के कर्ता प्रमाण कर्णा अस्ति कर् मर्पे पर्वाप्ट अस्य उथक गुल्दा भन्ने अधिः महाक्षात्रियः वाचा अद्दृष्ट् हिंदिन के अधिक के मार्थ कि जिल्ल स्रिकारक्र अदः वर्षेत्रक्र दः रश्याति नेकिशिव्हिप्पर्वे नका नुगर्भ मुन्द्रे रमधीपुरे ने का एक है था विषय है ने स्टिश रतिरुवमनश्यः म भाजानुवा रेपिया रेडे बीगणाः के बीम रिस्टा के हिंदे हैं हैं रदेशिक्षाहरू उत्तर है जिया है । ने से किए ए विनित्त निर्देश का तिन क्रिक्टिंग रहेक द्वारिक विद्याद्व स्टाइक रहे हासितार्डे द्यात्र विष्ठेत्र त्र रहित्ती किंद्र उद्भित्र ज्या। इंग्ये वृत्ति हुन्ति हुन्ति हुं। **५५**सिट्ट हे निप हेरे न हो है है ५व तस्वित्रकर त्रश्रेष्ठ क कान्नामक अन

क.

34

तरिः सित्राम् मिश्वर्गिता 23 किष्णानायरंग्याय्यम् किष 23 भरेक भरेक पर्वेषद्वेषद्वेषद्वेषद्वेष्ट्येष्ट्वेष्ट्वेष्ट्वेष्ट्वेष्ट्येष्ट्येष्ट्वेष्ट्वेष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्वेष्ट्येष्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्येष्ट्ये क्षिता इर्रेग्रेशाणायहेत द्वित क्रियं क्षित ह्मथस्त्र एक इति पर्ते के स्वाधित च क्ष्रथम् उल्वेक्ष्र अवप्रमः स्थिपरुष् वस्पमः मन्यः यत्रक्षेत्रे क्ष्रां हभरूता रुधेनभवनं दिग्दारिक रिप्ट रकान पर्भ हिप्पार्ड गभकरें माने हे 3 र रंग तमाल्या सम्बन्धिया समय भूमह्रिकानिपार्ते सभावास्यक्षिण वश्यमा असः सदयद्यः सम्भद्रभ 3 राम्तिम् भर्षस्य अभाविष्य अभाविष्य वाष्ट्रभाउँ गुल्म उथण क्रीय स्थिक ने नि उ द्वारे श्री करी कर दे परं

निग्नदे निपन्दे कप्रक्रिया ग्यनि-ध्ययः स नेर भू-भीकीकुः या है वा है प्रवादमा भू-भ मलेकारिकारकः।।ना अभवविधा िकिति हिंदिता गानिक क्षेत्र ति ति विकास मिष्टि-इन्ध्युधि-नुवधनीर-रपन्धृ डेनमान केय हैं य भेया भित्र हैं य भित्र हैं सये: भग्यः पूर्यः सिश्नां विश्वदीि उभव्यव्यप्तप्तप्तप्रप्रह्म भ्रमां वर्षा हता हता हता हता हता हता हता हता है। उवन्द्रमावस्का। उवन्द्रमुद्रिय वस्क गगुआने श्रष्ट विति भगकः पृथुः गर्व सर्व प्रवेनचं रव मम्म् नेपार् भून्य के दि: स्वयक्ति विशेषके वर्ग निर्माति। पाण्या नगानिक में शाधापार मुणका ट्राट अवः सरवारा यदा आयुं भागभाभाव है गुवेः ययाच्या भाषा युद्ध यनु अप भाषा विश्व पर्

をである

कर्ति भारत्वत्री तीन्त केविशिष्ठ मत्रमा श्रिय गुन्ता थारिए द्वित्र भागा मान्य हिंदी स्थाप प्यल इउचेन्यप्रचः नेन्यप्र मित्रद्रियामां में में भारत विश्वतिका जिसामावद्वित्रभववम् इं ३३ सिविध कवातिहित्रः सर्भागाद्भागाः यभूने रुमणान्यानः संस्थान्यः हिंद्यप्रय वुक्र प्रवृक्षण । एक या वा के वा भिने भवे रुष् गुण्यह के स्वयुक्तिक विः सभाभाग निर्घोगिति ए-यः युनेयः भराष्टः॥सम्भ क्षित्रहर्भः क्रिकेश्वर्धाः भेष्ठत्रहा व्यामस्याप्त स्वाप्त स्व स्वाप्त स्वाप अध्यद्धः भेगीयः भेगमणः गुरुपण्यः श्रुल्यक्षिः भारवर्षे स्वया स्टेशिक भेषयः Suppose Buffer Republications

राम्यान द्वार हेट वर्षे वर्षे नियम् ।। सिराद्र अयः इति हेरे किराद्र भव्याप्रः।त।। भन्न विक क्रिट वृतिक भवेः॥भाज्ञ वृ निकाराय है जे मोद्री निप है है यह भेष्ट दिविवासिया गुर्याः भाग्या गुर्वा संभी वित्रवर्तेः भून्य उपभविष्ट्रिय्तिपप्ट्रि भगभगवजानिक श्रीनवाभः निप्रचा द्वि न उ निकी या उ परि उ स्व निथा हु उ स श्व ई वैग्रानिवाभविगितिकंभंजवः निज्ञानाता। पिक्योधक्रक्ष्यायाच्यायाच्याया पित्रप्राचलीयुनिर्देशिकीयर्रेड पति यउँ ए निया निया हुउँ भग्न भागवता स ये विषशिज्ञयः उपज्ञयः।।द्याक्षिर्वेषा किर्याणिकरण्डिंगीर्डिंग किर्याण द्राधार्थे के भीत्र हिता पर्यं के के सिया विद्रभाग में में यन मिली के प्रापित पर्देश

क्षा हिल्हा हर्डिक कर्

णंत्रे क्रान्य विक्रिक्त विक्रम् अपन्त गाउदविष्ठिं सुम्बिट गुनः हरू। भ वै: पद्माउवराशाउक्केरवभादम्भ कृष्यः उर्व मन्यायरूपाश्चना वर्वे भेक्ष्विति हार्भेष्ट्रण उप्योग्ने विवयम न्तरक्रापनग्रद्धात्रम् वावस्ताप एउन्याक्षिक स्टाइत विकास स्टाइत विकास स्टिट्य द्वक्राकाकः धरुपायकः द्वीयद्विशः प्रमावत्रभूकि:चिक्-विद्वारीय मक' स्मः।ता। यम्बामिह्रमाध्यादिहेण ३६ प्रेचेववित्र मकारभुशनगमीर के सार् पमजीरि स्थाः भगः यम्भा प्रमाभाग्यः अमल देवल वरल संवर्ध भए एरें छर ्र रूक्यः धम्मानाः। त्यानस्ति दः॥नस्ति मल्यण उवस्कृतियुष्ट्र वेहवीर नरनः वण्यनः भव्यः दुधाः गणनः भणनः वतनः मेण्यः उथानः द्रयास्था से व्यास्था मार्था प्राप्ति । A REAL HOLD THE PARTY AND THE

प्रवह-मन्या अधिम् वप्रवृत्ते मुन्तिम १८नी-नक्ते क्यापनं भाष्ट्रेप्युनेनिष्ट्रे वर्षभागं वेद ने प्रवर्द्ध स्वाभव में प्रविश्व देवित्रभावश्चानं स्थाः मधः गुल्याद्वाने हु उत्पान ने विकास के वि र्गुन्या देनदेश विधिद्रभूषः युनेनयः यनग्रेमः कारिउनेभः निम् वामिभीकि प्रीप अविविधित्रिया मित्र विविधित विक्रिक्त वित्रेल्नर:उधानकभनद्गनमधवालर मयेन स्टाम्यः॥स्था युरु स्टिनिः॥ युरु दिहेण उहिन्निय रचे हवि ध्यादी उद्वभीविद्यादीयुद्यः युप्रवःग्रहित उद्दर्भ इविम्द्र शिक्षित स्थान उच्चा अस्ति हिंदि विश्व विश्व स्टूर्ग ग्राह्म विकार असिद भने भेगर न ग्रा भेरादन मण्डण मयामें म् ल्डाभी गरा द्याता । तभूपण्यू क्षानात्रके वर्षः क्ष्यत्रकेष्ट्रम् सम्बद्धः

\$.

33

किकार्तिका अन्तिक कार्यानिका नि लाथी-व केविकेच किवान राजिक श्चिवने- प्रक्षेत्र कथ्या व्याह्मी वृत्या त्रणः वशाउपण्येक गवीपहवाः वि विषः विनिषः ५७६:विवृषः वृषः गु दः भी और पीय उसिप्यः भागक विरीया विकियः निवायः विनः कथ नलियनदेख्ना जीविष्ठा ।।।।।भन विक्रिक्षित्र विक्रिक्षित्र स्थाप्ति । हः भभक्षचिहः कथ्रवेदविति भना विविकृद्धि अनिविकृद्धः भग्भिगद्धि भारेदरं के शेषाउँ उत्तरभाक के वे वे ठेउँ क्वे गुड़: विनव्यानिकः॥ता उप भने द्वाउपभनेउपध्ये सक्र उष्टिये विक्या स्मार सम्भार भेड्छकार्य भेरेविक मेरने प्राथित

起見

भविषारान्तिर हेर्डिड्रेस में इक्षेत्र मगरवेर्केश महभागियः प्रवर्ग प्रियह गहा कर जिस्मा कर जिस्मा जिस्सा न्यप्रेट विद्यार् हिम्मप्-पपन्य उ. प्रमत्वीय महः नर्पथ्ये क्वी मन् भवतीकवा प्रेंड कार्या अपद्रा उद्देश: उद्देश्याता: उद्देश में १००% थःथियः कृष्मः॥त॥ अण्यमिक भारिकीर इं कि विक्रिक्तिक निर्मा निर्मा विक्रिय भी राष्ट्राव भी मिल्ला स्था देश भागित देखाः रमांभ्यति-द्वायति हाम ह्यूभिर्धि नेत्य लागु-५५५न-भागजीवक मभागेता पिकामित्र नुग्ने निय उपनिवह्न न स्निय व्यासनाहां भी सप्रयोधकी भाषयः भादयः भागवः मत्रयः त्रहणयः वृक्षयः ण्ययः भागवः भाषवनु प् सिष्ट्रेया थः भद्रभानं भागने कानं उद्गानं विवभानं पि ताउडे **ब**्धा

\$3 39

इत्याण गुनाः कथ्य द उचे वर्गेपण तिमा किः मल महि गुनः व्यवानिभः विकः अक्रक्त र राजिनक रः यत्र भने कि पुरा ण्याः प्राद्धः प्रियः वन्ते वाष्ट्रपणिकः र्शक के उक् इधक रूचे वा भाउ पे नाहा। म्यु दिवा मुक्तमाम-नुक्तमामन् उट्टे उपिन्धासन्छ व भारित्रसंग्रह्मी विश्वन प्राचित्रामुप्र विश्वास् क्राचित्र श्रीक हित्र विकास नाभकारस्य येन यः प्रवाद्यायः क्या दिनिदिचिधीरी अध्यः स्राथभनिति प्रः थ्वः उपभन्न स्राज्ञाना विकारित मेहिलः॥द्वन्ना-प्रमक्थानेयन्थारे एनपुनवेभ्रवेभ्रवभूते दनिविद्या लनगर्ने पनगरिनगण्ये पनभर्दे

कुन अनुवे सनत्य है पर गरि दनहिं भशंबाणये: उचिएक थविम जे भविभन मुनेद्वभाउ-ह् भगसने वारशंगने वारशंगते उद्युर्वकार्त्राः धर्मकार्येण उद्यारः वृ नुप्राचित्र हिन्द्र स्थानिक स् मान्निव्यवगानि मुन्तिए मार्गिः याग्या ३: रूम ने श्वा के रिवृध्ि श्री श्री विनापनेषु कुमागंडे युजा परेड्ड मण्यः 65: तेश्वाताता जनाता. अष्ट्रेश्व **"प्**धिविविद्विद्वित्वित्वात्रितः प्रतः प्रतः थवी धमाद्रमन्ति गण्डु दमा द्वीती रावः नयतीव्याः उद्देशियोग्राम वनयस्तित्रहरूव महीत्राक्तरक्रभवण म् गभीरना स्वप्यनिकं पृष्ठनः २०१३ न्धरयेव वर्ष्ठ हुः हा वह हवः॥नाभा अश्चित्रा अक्टिन्य प्रमान के अन्य विश्व के अन्य के अन्य विश्व के अन्य के अन्य

4. W.

TT.

अभावः अभारे कि भूवः अभवः अध्यानि विष्युगार्थिक स्थानिक स्थानिक धमान के बेचे का विकास मनिया मनिया व उपयम् नप्रयोद्धिक विमान प्रयोद्धार र मवश्ति देवभाषः मतिकं दग्कः भ यकः क्षेत्राः हियाँ प्रदेशभीन कुरीयक्यक्यान्विरागिति विदिविषयिष्टिक प्रमाण हिर्उप-तिऽ यु- विषय मुभप् १०० जल्मगरे भारा चार मेलागरे भारा भारा भारा है। मिरानिक के का का निवास का निवास मिरानिक मिरानि किति निरिष्ठियोञ्जार्थणा । भाष मवस्याः उपभत्रः उनः प्रभः गरे ध्वान्यः प्रथः देशिद्धः निष्ने दः विष्ण स्वयः मिनित्रम्भः विष्णेवृषः गर्तिसर्यः स्वभूतिस्वस्यः ६६ति एव: 129 Pet

इन्तिणयः स्रुयः स्व भग्वास्यूष् म्रक्टिंट्र स्थारे:क्वमस् स्वकः कुन्म अर्थिभन प्रवश् उपश्तिर्गिष्टः क्षिमः।।जा। ग्रेन्य। ग्रेन्य डाल्प था उप विविध शहरः यहः देव ह प्रदेशः गक्ति भीता स्टिन् नितं विरूपया नरे सदः इति विरूपः।।त।। केंद्रभगे देखा। गद्भाव विकास तिद्रज्ञे शेर्दिनवाशः एक्त श्रीरियदं एकः प्रभेग भेज में वे हे भारः यह ि भारत गरी पिगराउद्देवद्यामान् भीः प्रथम क्रुर्गुउगता मिन्धितवृथां। करे: मि क. विभिक्र भिक्ष र्ये हवा रिश्विम व. नीमकानकारा भारा भारा भारा माना ए० याकः परनंति न्यमस्परकः गान्त विस्थान रेकः विश्व विस्थित नेपः

भानवहरू ने जिल्ला मन्त्र के नि क्रिमें में वे ए द्राप्तिन्। तिक उतिम् 2येठविष्ठ गानं मिन्यु अशु गासकः गासिका केपरविभीक्षेत्र क्रिक्न स्टिम् स्टिम गयाः विस्थितकु अगद्धार्थिकवि गानं विस्पूष्ट गायनः कृषि। गाएनत र्स मनी विज्ञीवकप्र अग्र ।। ।। ५:क नवीरिशायरकार । यह लोग । एए द रभूकनिवीरे मा उद्गणियश्चिती रिद्धीर मक्षीरणवरः भवरारः एदर मकीभीर प्रयनानी दयः कन सिंहः कि द्रारमामाग्रदकःक्कारदार्भवा। मुमिष्टकः॥ सुनिधिग्राथ्भा नाया ण दि व्याप्त मान्य अस्ति विक्रिया विक्रा विक्रा विक्रा नराग्यानसका क्ष्मका का वक्वक र्विभाउनायः व्यक्तित्रभाभी उक्तमस्य मंभाष्य

भर्ते ग्रेयन कि कि विकासिक विकासिक अवानी थ्म छेडवेशः भीरि उत्तर प्रविश्वाराणा थ्या सामा पक्षिणा पूर्ण गरे अगरे नुग्नाक मध्यकुरहरू क्ष्रयोजाति अप्राथक एक मुः भाष्मगी भारके भष भंसकिथियाः भाष्त्रनारिन्यकः भाष किम्मितिक्वियाति।त्युवन्ति कर्नाल जाउधारिष्ठ त्रीयः।क्रम्यला क्रम् थयन काउँ ग्रह् र्योच्चीर इस्कार बराष्ट्रायः क्ष्रसन्दः इत्ते क्रोतिका गिउ कथ्नानिसद्भि मन्म मुभ्योगेर्ये स्वीय ग्रामेग्डिक कुरिक्ट्रेपस्तिकियं क मन्ति नर्माभी विद्वार यज्ञ संन थ हर देनिक पान जो ने के मार ने निक्षित है।।।।।। अर्थक्रीय्तात्र्यान्त्र वान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र

यः भूर्मित उन्नय विक्रिमीरेम य उपान्य युवाः भाग्यक्रमकः याजीव ग्रेन्स् उः॥जामीलिक निम्मिकी की हिल्सामीन्यथणान् मार्गिद्धाः व ३ : क्थक ह्रयं क्रमिन विष्ठिणि लिन्ह नुः माग-हवाम्यनग्रहःक्यद्रथयम् नथु रचिठवीत्रमारापुः भी भारचे विनेषः य न्गंकितिरंभुद्यः भूपुः भंभंमी नय रिअंभयीनः भेभमीतः पृष्कभयो पर कामः भरकामक न्यानमा अवन्य माः क्रन्थामपं क्वायो सर्वाः महताका क्याय ने विष्णिक व कृत्रापेप्रीक्तरे भाषध्यीकाः भाष्यीकाः हरं वाभडे हरकाभः हरकाभगाता। युउन प्रभाग है। एक मुद्रपथ है सक गर्न हर राभ

नू

साम् उद्वर्धकवित गढःकथ्रन इः सन्थ भनाषितिकि वहवाभरायः वहवाभर णीउ चुन्यावा माधिक जीविक गरिए र भेग र्थपयहेन्य भार्यिका अमिष्ठिभ मनी: विस्तानी: मर्डिने आधार्तियः हैं: गत् अवह उस्माष्ट्रमवे परे राहे की। द्रतत्र विषये विषय दः पञ्जने यहना प्रीष्ठ प्राप्ति होते ने पेकर शुक्रन में चानितिरान क्षेपः ये लीकि भाषभक्ष्यः भाषभग्रकीक महानामान्यानामान्यान्यान्यान्या वाद्वारःक्षाद्धपप्रमध्ये हवीर नाः भन्न प्रमेण्डः प्रक्रिया विष्क्रियः जाति न्त्र विष्ट्रारमः अभिविष् विक्न्यभागद्विष का-कलाष्ट्रायः अववयम् उत्यात् ।। गे गर्माक्षेत्रमा प्रमान्या

भगायी भागगः भागगि सुनिधिशावण उक्नापमनार्धभाभागवः सामा भगनीप्रिवरेशाभगमी विद्यपम्प ग्नथभने रिवेड भेजर पेचवित्रभगं थिव रिअमण्यः भरुधी सीप्यः सीप्रधी भरूमी विगितिके अपयः। यात्रय अज्ञाकि अग्रायायः॥हरा हिन्द्रये न हु भने वि। हिन्द ५ ए इस् के भक्ष पपक्तिन्द्रिविदिवाउवधीस याम्भन्या श स्भाने यात्रस्भनभन्ते पर्यभानिक्षात्रः यः कर्मर अधिक दिला स्थापिक वर्षे दरण्यमञ्जादकः सम्बन्धिन विकृतसः स बद्यः वयेत्रमुभन्येनिशकि भुत्यनिष्ठ गदारः किनायं ये जी देवस्त्रीव स्थानिक 小街 अभाषा अधिक स्थानित स्थान नं बीलं यश्भा उद्भीतः उथ्छ वश्र हृतिने SE अरेबेन्ड एक: कम द्रमाद्र महत्र SG THY

उन्ही ने अध्यानद नी वर्षे कि प्रति भुद्वी इतिरिक्ष किरियः यसि की किर मन्द्राति स्वाति । स्वति । स्व युमिट शक्त द पप्रक्रिष्ट विशिष्ट भद्री प्रश्रिक्ष मण्डित्र स्था अस्ति । क्रियाः अक्टुम्बुमानाकरः एदर न्यापार अर्यः॥ दलका ० ट्रम् क स्थार्वा हरू राज्यमाद्य पराह्य द्वीय प्रहाना मार्था वर्षाः नत्रण शक्ताकः उशक्तीपथद्भव भूगाउम्र मन्द्र विरंग गः भक्भक्रिया वहाँदिवियाउँ भाग्नियाव में विश्व अन्ने ए पुरुष्य है ज्या कि विष्य के विष्य के विष्य के विष्य कि विष्य कि विषय क विष्ठामहणः हर्णसुष्या भियानिय क. उस्टें शिष्ट करंगिर कार्य करा ए रल्भि खेवमय इंग्यानि येगा सरी JE ाद्विक मित्रामिहहरू द्रावर्थ हृहाराष तिमिति। सक्नण उट्टारिस्कः शक्न **ः** तिस्सा

थ्या अधिक के महरा प्रमाण एए। कः अवश्यान्य वा नावरः सीवश्यानि अधिमद्र अस्य प्रमान्य क्रामान्य स्मित्र विक्र द्वार जिल्ला निकार के निक 3月47年至日中的3年至年起共 सारी भू में दिल्हिस इंके इंसे इंसे हिसे डेंग स्युद्ग ५३व्याजि॥ ज्यास स्वन् नद्भाव विद्रित्रभाग्ने गर्ने वा जनः दार्थ म नार्ने सर्वारिक्षिक्षेत्रे अवस्पति म अययरेष गरेक द्वा ०३ त्रः ०३ त्रः प्रश्नेयदः प्रश्निक्षः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः न्द्रभग्दः स्यूनग्दः मङ्गमण्दः यङ्ग मगरदः तिमग्दः विभाग्दः गीरुगदः म किया दः देशा यदः ज्ञेमा सद्दशासा सं प्रवे SHE! हः अंद्रियागा। जेमब् अवहेण्डहः अद्भार्या मिषाचिद्धिक सिंग्स से से सिंग्सिक सिंगिति सिंगिति सिंगिति।

सीर विकाल । यकिकाल अध्यस्मित भूषटश्रुद्धारावम् उत्तम् वारम्भूक वितेमयः।।द्यायरमः॥यग्ग-५२२५१०कृ न्य प्रभन्ने एप्रयेहविवविवन्य भी वनस्र प्रमान्यकाराज्यान्य कार्यकाराज्यान्य विष् उक्तान्त्र यनक्षाला यहर्षाणामा काञ्च शिभात्र प्रथा हमाः द्रप्रयोहकी विवारं जाति विवास्य वार्ति वार प्रमुख्याना स्वास्त्र द्रष्य अगग्ने रस्ट यह ये हवा उथा : भाग शिराःभारः सम्बन्धाः सम्भारः सम्भारः र प्रमाय दिवह तामा कि तम में भी में प्रमाय गरेकाद्र्यपर्मित्र एए उस्विति भवेः भागीरिधवसस्कातिरिकं भुवंद्वं म अग्रिय में वर्षात्रः मान्य वर्षिः ॥द्यादान 53 उन्होन्टनेनेभेष्म सञ्चक्ता^ग पार्वा अर्भर्भर्भर्भामक विक्रि

をか

34

क्यद्रथयद्भागः एथ्यये हेरी है के क्र सीर् अन्ते स्माणस्थाने दे द्वीतिश्वाणकी रंग्यु का वा मुननिध्यन से भगदि में म व उरायमार्कितिकर मनव्याविश्वास्ति विशक्तीयार्भकृतःकरमिककत्री गृष्टी ह मिक्रियः कृतिकाः भप्रकाः अन्ते भू स पिकाः सुक्षकाः वास्त्रकाः समग्रीतिषुति किम्ब्रकाः म्वक्राः क्नेड्कारः गामक रः वैश्कारः माएकारः भुरकारभर्का गः पमकृतः सन्न वासः॥वार्षाकारा ध्रान्त्रवहत्र हत्यः क्षावहानिसाध्र डाब्रिएक र नामा के निपिनियनिय के विषे मक्रभुपप्रत्ववद्यः एप्रय्वविषीऽ केन द्वाः उद्धाः यद्वाः कान्काः स्वित्वाः भा मानुकाः माननुकाः तहकाः त्राह्माः क्रियाकाः विराक्तः विमा क्राः प्राकृतः

र भुरः भिर्कारक रेक्ट न सीक्ट किया निधिकाः सिधिकाः भ्रीनिकाः हिकाः वे र्काः प्रकृतः विकाः विकाः विका टिरेक्समहै ॥क्समहैक्स्य्यादिक कि एप्रधिकवित्रहित गाभुभानायां हित वैउनं स्१वनिधायः क्राक्नी क्राक्ना म्थितिक के विकासिः स्थाप्यापक मभन्यकिषिडिक्षाणि अनुशादा अभुमकोसी दिख्या येशी स्थू में हा दे क्रमन्द्र यथमध्य प्रमाण्यीदिवस विग्रयःहमः उत्थार्ये घरवी अभूक िः द्रिन्ः महाभागः वद्याः च्रिनिय द्वाः कि असकारः महाद्वाराः क्रायल्य हिप्ता। कम् निष्धमधेः हा । अध्यक्षिकारि धमाव गुरुषिः नामप्रीः धमुः मृति भुग माह्ये नाभगहः॥ माह्ये नाभगहः॥

かずる

हमनाम स्राह्मा हिन्स न र स्थाय म कामधार प्राद्राधार रुग्धा भोडवार दनानग्रहोडिफत्रप्रिः दनग्रिगः विगित्र उच्चा द्वापुरा या का भनेगाति है अनग्रिः जवंदेरे ग्रिः॥न्य विकास्याम् भा हेववाउ४ ट्रन्ये कमल्य मध्यहाः सुध्य पुर्ववस्थारवात्र कवानाधीत्रकारिः वाउरियः विकासम्बद्धाः विकासम्बद्धाः । अभूती उसरङ रेउपे:क्रमनिष्यम्योः हुन्ति उट रेशीमध्ये विद्योग्ने अभिक्रिय मिन्द्रीय: अस्ति मिन्द्री मिन्द्रिय मुडः हम्म द्रामाना मार्ग करा निया हो। मित्र गुरु स्थाय स्थापना प्रश्वे कारिया मिर्यः एनम्यः ह्भन्धि गिभगभः।।।।। सम्भार के मिल्लिक है। नगह केन के भूर विषक भूग भारत के विषद

भाग ल र भूगपा कारि मुनि व्याः विमान्यविषयः उत्तर्यस्थितः भूपण रिडिम्नीमक्ष्रुह्मः सूर्भवृत्तान्तुन विश्वयक्तेन मिवह ने देशियों मंत्र ाणवं भगत्यः भगात्याः अगात्याः अगत्यः प्य त्यः अववद्गनभगात्। नानीका भ पानिक्शक अभयपान विद्यापि हवित्रिनगिरु हुपः नाम हुभः हिभगागा थ्याकान्यःकान्यसम्मित्रयामि हेभः पाण्चियः याण्यभः नासिक् इयः माना हिए हे स्वामानित मानिवान विष्कित्र सुराय प्रविष्म क्यों किया विष्यानित्र ति विष्यानित्र विश्वानित्र किष्यानित र्थेकवी वद्यक्ती वद्य

किन नकः सम्भू बास भागपि मेन प्रिक्त भारतीभक्रायभः भभ्भंयिक्त्रनेधः॥द्या नभदि गृह्मशा मभद्रग्र र र र र र र र र र र क्रमाध्यक्षेत्रम् अपन्य स्थाप वीर संमिद्रास्तर कर के उन्तर सम्मित्र मुजिः पश्चामा । जिस्सि सिरिए प्रपासति क्रभद्धभपद्भग्रथशत्रुग्ये इन्याञ्चमार्क्यात्र स्टनाएन्पः उथनः।।६॥१भाउनाप्पानिमन भवाने प्रेयम् । भिउनापमवर्षः कान्यप्र म्बारिय भी स्थानवासिन स्थाप महिन्योष भाके इं डिमा डिमा हिमा कि निमा मा । अध्यक्ति । यु १ द्रा १ यो भाग विष् मः प्रभावता ज्ञाना है । जिल्ला स्टूबर्ग के न क्रिक्ष्यप्रदे उद्यविशः रहे हर् वर्षायन गरम अपमाठविक्त समुद्दि के सम्बद्ध

1

महल राज्याका निह्नमुन्ति नेश्यामाग्रञ्हरम्भित्रमाग्रञ्हरम् वदं तिदः गृहितदः ४ गगवे, कान्य उथा हिभक्तिहरू दश्यात्र माविकाञ्च अञ्चाति तार्डिय अवामार्स्डिय अभियः प्रावितित मृिरिज्यम् स्मानावाः पः भिय वमयागिष्यवमयः क मिन्पप्रशिकः 23 या बाजी र अपूर्य पृथ्ये वर्ण हिंगू ये वर्ण ह वशेवकः।।जाम रूपक्षिभूग्यः।।सर्पन्यक मिल्यप्रमायराज्यभागु ये ज हम्मीक वार् तथ्रधेकातमञ्जूषायम् उपायम् र्शिताया अव स्था के के शुर्म के तशा भाव उत्पर्करीय राष्ट्रकर्मे भूमें पक्ष निभार परभू विच्वार भवेकपार भवेडपः अवद्भागानी स्ट्रिसिंग रिः करिया थाः विषः।।द्याठयोष्ट्रियप्य विषः।। वयद्रि

कः

33

न्य के विक्ति विकास स्वास्त्र के विकास स्वास्त्र के विकास स्वास स् भागभारतेस्वीर स्वाहरः दिश्वार मेपाहरः ॥ह।। विभागिताअरे हत्तास्॥ ब्रान्तित्रभरे हरे । विकर्भगतिस्वेश्वेतस्विश्वेतस्विश्वेतस्विश्वे मान विभिन्न निमक्याः प्रियद्भाः प्रियक्यः अम्द्वाः अम्कुरः कम्द्वाः कम्कुरः॥व॥ हमकुण्य येथा मिड्डायश श्रीमाउमेर् उपप्र इभ-४ रश्मि व्वी अस्मिया कि सः थ्याउँ नवण्य अधियो नव उत्त नव उत्त नव उत्त कान्यान्त्रं सुमिउश्ह्वन्याम्यक्षाः सु भित्रे छत्र हेनेना मित्र भेतः । उपने ५ र रोतः। हो। नरीय के परिकारिक में अधिक में क्रिक्ता। ३०५४व न ३ - दुर्माणा- कराभे हरू रजाव-कारिस्य करायव-४ व व व व व ममं उपभं धर्भाव छ ने भूपमं के पिठवी भंकी यंगिषयाँ गर्मन उपित विश्वास्थित ।

वंभागविश्वित्वत्वित्व भूगविश्वः विश्व अभागकरामिक स्थित स्थानिक स्थान ण्ने दिने प्रमृत्यिक्षः युगं ज्या यो युगन्य षिः य श्रीगा र गण्निप्रभाण र स्थित उंनिपर्देवनुष्टः सारिक्तीग्रहमाध्याः अविभद्शाद्मान्य हा। नश्रूपय के गानु राइनिव 2श्विं वीत्र में इति भेड़ियां भेड़ियां अहिंगः उ उद्गमः एन्स् भट्स वह्माः । ज्या जनित्र सभी मग्विदेशाउँ विद्यानिम् यभाष्य या ग उपीर्थाप कि शिर्म के प्रियम भेग्दे उभीव ५ ५ हे उत्पार मे हवड: शेष्ठियं विषये उर भागकी उत्तरमारीय योभगकी उतिहर कारणा क्रमें हिंदानीया नार्थ्यय गर्भेग मितिहरू म्पर्योद्यिति भेष्ट्रयानु भेष्ट्रयानी परिवरिष 39 प्यभेगीय उरिवर्ष संयह यभित्रयेगेन्छ विष्ठानाः क्रियः विद्वाः यन्त्राः भवतः भवतः

母? ₹.

अतिभेक्ष्यो सभेक्ष्येयदान्त्र गः सृष्तः भविगः हमाः थागाः॥नामिहस्य गाउँ एकि।। विद्याना उउड्राज्य हुउ वापस्य गार्थिय क्रविद्रश्रम् ध्रद्ये प्रचित्र गणिति प्रच्ये विद्रा यभः विद्यु प्रमाविष्य भिगम् ति विद्युः उग्वीगं क्रिन अस् अल्डाहिना है। कुट्यः।।वा व्यापिमा सरभाविक उत्राध्यपदिनप्रधिकातिकोत्रीको महीका गुःक्षिणा गुर्हाः सन्काया सन्वः प किक क्षेत्रक द्याना ।। द्रानि ।। द्रानि । मीत्र देशा के भद्र प्रथम सुमिषिनि म व उभन खेरे ५५२ पिठवी उमरे व प्राप्त इंदर समिए गरी हैं मंदित हैं मदःक प्रम्मितिकेम यह न पर उदाना सुमीनि हिन क्षित्र में कार माना है से कार किया है से कार किया है सित मायाद्वार सुद्र है: के.सउप्रीक में निप्याच्य

मध्यिक्यी क्रिम्भयदि । ्र ३:३भेपद: अद्याका नुभावती विकितः॥ कुश्यामी हिंदिक है निष्णा येद सितितः भूरपेठवीउ उभारंदि उभागभागीयी स्थातीलनिकारप्राप्त केर्न ज्यात्रम् ११ जिल्लाहर में इस ११ में भारत एस्केन्क्रमपरिः । नकि ग्रेक्सपरिः क्रमण्डियपद्यहर्ते र प्रयोग्योहक ग्रेभ्रया के का गर क्या में हैं। १९ याध्यानु सकः भारत्यी गया गभद्ते थेगा नेप:निध्यवभू मित्रियाः।।द्या मान्यूक किमाक्राक्षपपर मभन्धकाक्री उभानामुर्यः एक् रेय क्वीराध्य भूष्या कर्त्रंभव समाने वर्षे कुल्हा है अ हर्नुक्रथाउक्ता ॥द्यामक्रिक्तिक्रण्यः॥ ५ियुक्कार्याः क्रमान्ययम्यः ५३८री

中

q,

उग्रहिक्तिम क्रिया भागा मान्या द विश्व मान्या व यः क्व एभ्रह्त धनः इति क्व एयद्वन भ भक्रःगहारिकि दिशुष्णाःकपानःक कदलाउड्यस्थायाराजिलाउड्लाम विभिन्न के किया है के किया है के किया है किया है किया है किया किया है 5 अचा सुरु: विविधिति दिसे पर 23 भार भार भार क्रिन्यम् क्रिक्टिक्रिक्षिक्षा महाराष्ट्र વાનિતા પ્રયામિતા માત્ર કે દામાત્રા કર कुमर्'न्भावागम्सिराध्यानुस्तिस् गार्थिक विकास के विकास के विकास कर में विकास कर में विकास के किया है। यम् वस्य मुख्य मुख र्टियुर्वित्वति स्वत्य स्वत्य स्थाने सार्वा स् हवरिकारिकारिकारिकारिकारिकारिकारिकारिक ग्रेडिय उद्योग्ना न्या उत्तर महामार्थ प्रकान धक्ष पति हुउन्ने एरेश्मी एवन ने सुर्व मधानियः धीत्यः मिष्यु स्वायाः

語

विषणकात्र गराजनिया राजी भारता किन्लेनु दि:सिप्वः प्वः विकारिकः स नव्यवंशिक्तिया यभूतः भूनः दिवानिन भुतद्वा ने बी विद्या से भहराः भहनः दियायेनभः भरगद्वान्द्वाः पग्रहः **उद्दिश्यित्रवाः सुद्धत्रान्निर्माः यक्तत्रत्र** क्षिण अकि महत्त्रियंत्र मुग्यलेगभी भिनाह्य:काल्फ्रीकिनमीठाउवाद्वीयःगडा। क्षान्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र क्ष्या विश्वास्त्र क्ष्या विश्वास्त्र क्ष्या विश्वास्त्र क्ष्या विश्वास्त्र थयक्षेत्र भाग्यानिस्भाषिष्ठाप्यकार् देशेकवारः जेपकारिकारितारका स्वीभद्धः का अवस्थान मानुसाम उक्रिक्त महुउद्भविगभूभाव सूत्रमि न्येववित्र में स्विधुः न्या भाषा विजः धतिकवी अधिक अधिक ध्री धारित ४ विश्धियम् विश्वविषयम् A STATE OF THE PARTY OF THE PAR

कः

वुः

TO

110 5

でかい

अविष्ठः गरे ४ वर्षा भूनक्षिष्ठाः भून भारता महास्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स हत्याद्रीयन्ता कथ्रथपट हर में बद्ध-यानी विद्धयिक्षा नकार कि के अधिक के कि के कि के कि के कि के कि ग्रहक्षेत्र वर्षेत्र हर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र ए इन्हिन मी याः उग्या ए सफला उ ग्रहन्ये प्रदिव्धिक विक्रिक्ति भाष्यिक पुक्तिवितियोः भद्भाष्ट्ः भः एतिवेशाण्या। वर्डा। वर्षायान्य ३२१ मार्ने मार्थाया ष्ट्रियेक्वीर प्रमुक्ट | उद्वण्डिक विक्राणिक।। सन्भिक्त्राम्बनभी मद्भारपण वद्धि-ज्यम् विष्युत्र म्यान्य विषय विषय 活動 यनेवरी सन्ज्ञाना।का। इस्विद्युपति वधग्रीष्ट्राक्षाक्ष्रीक्षेत्रप्रमाच्या १३ यहवानिक हु करनः द हु बादनः धनी ध्यादनः 25303

धरी धृषानः -क र दिन्द्वित गुः एक रः में भुरूपा के स्वाद विवाद नी भीता। दी। स् मया उन्साः भी काः मुख्या मा जिल्ला र अस्मिन्नी मावधरा एए उन्ने अर्थ र मभाषाभ्यं कान्यं मः मात्र भ कानुद्रित थू रेगेनिपार्जित्सरहूम सवयद्वीत्वव यः यवयभा यवयभः उक्रीन्मं भरेउ कुमान्त्रक्रमभागुरुसभः प्रक्रिक्रिक्ष प्रेन्नेभिथ्नेन सः में उत्रिम् उवदाः में उवदः में अवसाधारा महत्वेपाना महत्वेप ्र<u>स्थनभूपपद्भक्ष</u>प्रशोकित्रिद्धाः वेगका भागा काममण गुमी। अश्वरीका अध्यक्षिता दिवा में अध्यक्षिता । क्र 4. विद्विभगिभाषानि भनिद्दन्या।। क्रथप्रकृषि कियाश्चारेग्या स्वाप्तिकार निष्या निष्य 23 रिवनएक्यप्रमुख्याप्या वासु यथक विद्

पित्रणीयो स्त्येत्व के विसर्गा विशानियनिविशायः गंभनिविशिषः य रभाः म्युष्टियान्यतुः निरुः प्रनश्नम् प्टिः सन्नविद्या एक गरीय निरुद्धिः किये के के इस्ता का मान माना महत्र लड र स्टानविक्ते समूधधरिता हिला हिला है नुभभारि स्वारास्थ्यति अभूगा सन अर्गीकियवारः॥जार्वियार्वेन व्रिउपध्ये महिष्ठिविष्ठविष्ठम् स्वभात्रहात्रां हरातः धत्रेन्निस्विताः ग्मे क्य है:।।का।अनियुन्धिविधनेप्रभने।। उपभेने उपभुद्ध एउ भीन् नाकृतिभावित धाम्प्रेय्रया हवानु समक्षीविषः भ अञ्चया अः उनेनिष्ठवित्र नक्राधकारे ५, धर्ममधीलक्षक्रभगन्त्री उत्तयहेव जिल् क्षिणिक भी होने प्रविधिक व भूरवहान

भरम भगग स्वीवासपीय दापिण. णमाज्ञीनिययवस्त्रवास्त्रभागाय तीतिवा वित्रपायद्या अम्बन् कुरिक्ष वाक्षित् वा म्याकि विद्या एति वेष्ट्रमान्ति । विणना अविथां प्रिए भित्रिक स्त्रुभारी नेप्सिवध्याभ्य व्यक्ति एन्ने विद्यान भाने है:वीन पहलीं सन्यम निरिक्त भाषा भारतिकारीका स्वांपाक सक्तिविदः भाभन्न या गुरुविस्थित विस्थान भागः भागः म्निभनेन स्वार उन्नामिक स्वार विद्यार श्राकाः अज्ञेष्ट महः ।।वाष्ट्रिया।। ण देखिय विद्यामां भारत वाला भारत कः पन्निवंशाउपन्यायकान्याय ए. व्याप्तिक्षात्व विश्वास्त्र क्षात्र होत नि गाविताथाउ भावन मवनम् गानिनं म गर्याधिगम व्यवक्षिणात्र भागान 目的音声影響

टिंडिक को इंस में सिंड मारिज निया र ने दिन यक्षिरिक्वाच्यम् उपम्हे यह विश्व भट्डे वरा स्था से मुक्क कि प्रमुप गर्ने दर्भिषीति वसने विषय हो स्व ग्टानस् भका भट्टः किथिश्वणयिक रागभीनथा ३ जिस्सिक्सिम् मी अस्त्र जिक्सिण कियानिया दे उद्मिकी ष्ठिरपिरेण्य वः क्षिथ असे सेने पेनिथ 23 माना के द्वारा में रेड के के में में किया।उपभी घरें छेन् उस यथानमा उपभा नसामिनिर्द्याक्ष्मभूभभक्तिगर्यः इन्द्राक्ताराया हव उनकार शिव्य ममद्भार दिस्ता भारत भारत स्थान उपिकाः गम्का सर्वेचम्स्सः शार कः प्राप्तका स्थान् स्थान्ति । स्थान म्का की प्रशःकी प्रकारकी प्रकारिक AR FIR

सम्बोधिकातिका सुरा सुभवन्थ ए द्वामाक्रमानि कि दिना कि विकास का प्रमान भनिति भःस्यु र उद्यापिति विक्रित स्रुप्यम् स्रुप्तामार्ष्यम् न्थानाए विकासक् माध्यास्य जिल्ला प्रयेदवीर महिने भूभने मुद्दु क रवद्वार किया से स्टाइत है। उद्वेशची ३र हा वट २३: अप क्योग कीरिक्ता मान्य के मान्य किया है। र्फ अने भने विक्र भरियो शहर निर्म द्यानकश्वालाकाकार्याया भानेका इधापक्रण देनि निः प्रश्विता उन्हीन्यथ्यान्यवृत्रभार अस्तिमी क्त्रपाउँकि सामा के उति विभूष निवहन्या हवा महत्व अधाने वा कि उ व्रः इत्माउ

कः

EE

बुरकीक्रियमा। मध्यप्रमें करें कि निः हविष्य उस्विकार्थभनेय्रिगवर्गिम्स्कृति भागियक्सीदिष्यन्य सायीभवुभं भवलीया भे क्रेनियभेव्यभाये नः यष्ट भारतिकृति ग्याय न उमीनग्रेष यथायिनेगनुगः सुद्यातिथा वृद्धक्षाहा। अवः ये वृद्धाः वाना भूषपद्भाव न्ड रशिनिविधि सरिभाविष्ठ रेने ज्ञाप द्रेश्वीतिद्रेष्वयुविधिकनंभरउम्हनभाविमी। दा। भाग्ने हुउ: एसा हवाडे मसक दिस्ति मुभक ग्रभाद्भाने अच्छे अहरां भट्टा भट्टा भारती थ भिर्यंगरःपश्चित्र भागित्र भागवीति भागवीति है काल्मीउष्टः॥काल्यपान्त्रीउका न्यद्विति । अति अति अति । म् भयादी कर न्या की भ्रवाना हिएक अ क्रिन्द्रमा क्रमद्रथपक्र, तित्रक ले ५ ३ वित क्रिगी

नगुज्ञ यन्निविष्ठिधिरहेड्उव नाधिरुत् न्ति शिक्षा विश्व के विश्व के विश्व कि ग्रथयस्**ष्ठित्रात्रक**स्तिवत्रात्रक्त दरक्षा बुद्धरह्न दरके उर स्थारिक वृद्ध लंदित स्मारकंत्र उत्तर्भाव उद्यक्तिक विश्वास्त्र के स्थापन भित्रेकिकिश्च मन्द्रिति छेण सनिन्द्रभाषिन मान् उचे के या उभारत के भारत अपिक भ्रथ्नेनेतिरिपिसंद्वितयगाअभिक्रभाव्य क्षियपार वारी जिल्ला देश वित्र वे देश यभङ्गुजनुद्धारिष्ठेवेपयदिविष्ठि र राष्ट्रियार प्रथम द्वियां गर्द थिए द्विया उनिधाउन पायमा मार्थिय विभवना दाः नुः उर्याभाजीपरम्भित्र तथाया है। अस्काराज्यक्षातात्राह्म अपर्या EN तक में में अतह में भी ति तता के अने में

यस्य विश्वित स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप मेठनेह उक्त अहज । भष्ट हा भण्य हा की भ नगभर्कजायम्बा म्यभिभाग्रिष्ट्रथप्र धु तीर्वेक ने हारः वितिवितियभः न रूपीरः मुंबी देश है या कर कर कि विश्व भेरहा रह नेध्याव भरेत-नेरेक्रः कर्कि उशाशी अभिभाषाभिभगद्ध उथयह भूगामिश विज्य रेश्वी विशेष विशेष अवना भे अथागमयभीपभिभगवे, उपपद्धभूकः वि विविधिनयभार राजे में विविधित व उक्षना श्वर भागाण देशेनुः।।दामिर्यो।। म्यामक् उथयह किषः किष्ठा मित्रों क ल मियिक अक्तानियिकिया। जाविकिय अनुस्यामा।क्रभद्र यपस्विप्रचात्री मज्यवित्र मुख्यां मध्यानयं नुप्तान् की विक्रियी भेभवित्रयीकी गणिम वृधित्रये

दिवास-भृतिषद्भानाः उदा उदायां भ विष्ये असे स्वाप्य असे किसी ने जिस्सा माहा क्षि:सनिया।क्रमद्व यथ देन् मः यश कुक लें के निक्षिण महा मा मूक्या था भे मू वानामाभुम् ध्रवनाथकः ३ ३३१३६ मध्यम ग्रेमिन्द्राह्माश्वर्षात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्म र्भथान्यम्प्रांध्या अध्यानिष्ठारिया मी किने भद्याकाना भद्य हैं गाउने प द्विना गर्य वृद्धातालम् साभरगद्गर्भा पद्यः कष्णु जी उकत्ते ज्ञानिभूवित भद्रका वाना भरत्या राष्ट्रनेकावारा एकरण टेस्ट दुप्रधिकवीउ युगिउक लेभगीन किंगानिह नार्व उत्तर्भ क्षित्र निम रिअपु भूरम् नका सर्व भविषिष्ठि अवस्थितः मेणभूजेलन्त्राज्याम्याज्यः दशकः महतः।।हा।

कः

32

मर्गिता मर्ग्या प्रतिकृति । क्वीउम्प्री रेक संबक्ष रः मृद्रः मृत्रः मृत्रः मनदः।।नाविष्णाकुत्ववनिष्ठित्रक् वंत्रीनश्रमेष्ठित्रण उपजी इक्तिनश्र प्रशेष्ठविष्ठ ३ रहा वक्षेत्र । कर् इति इत भूरये इवक्रमण्डेपा कुर्व के कुर्व द्यानी के अपने एनिध्न द्वापानामिकियारम् चित्रजी जेकाली हिन्दू विश्व स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स् म्पान भारत मार्थ के वा मी। वा स्पित्र मुना। द्धार्याच्या स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थाप उर्वाउद्यन्ति वास्त्र अपन्दिन स्थित नका यः मेर्ना कार्य मेशाहार भेगानी कावडा। प्रतिक क्लेस सक्नेप्र त्यान्डवर के का भने का बराय के वर्ष या या नि 1 राष्ट्रिक शिष्ट्र हर

प्राचित्र ना प्रकार का असे का ने भोगा महाराष्ट्रियान के कारीप भावत क्रिने हे गुरु असिपा हा वा अस्ति । नेपान प्रमास्क्रिक का अभावता करें त्राभानकाल्यानु सामुवसाड हे अपूर्यो हवाः यूप्यभेकालकानायः ३३भ वार्षेत्रकारे हेन्य हेन्य हेन्य होन्य है गाने पमुद्धिया हुन्यागुण का भी विवास उप पण दे होते हे इस्त्री स्थापना रुदि अभवास्य द्वार अभवास गरी स्वार्धियामान सुगरी महत्त पुनम सक्ताः भाषा कव है । ए कारतिया कार्या है। भवण्यक्वद्याद्वी सुन्ध्या सुन नेनुन्द्र सिमकारागमः नुप्रमेक विकाल देवज्ञासमी भ Articles and

四个

सकाल दे है: किया या अदिए येन तकुरी यय सेवे दें उभुद्या विवे पर अवगुणन ज्ञ उ: मन् करने स्वा : तक ज्या भूव नाभयिकतीन दशने भाने कहनः मार्थे गिद्शहें अभे हिस्दनन दिये ला के उद्देशन नि यभभानिय यामनुः सेवभानाः विसा नीय निर्देशीय युमंभनुः पुरुष् भिद्रिक्ता भी वाग्निभवन्तंभन्गेन अहरूने भूदे उद्देह <u>ट्रिलक्षणदेश</u>ीकीकं रत्त वस्ववश्राद्धत भर्तिक वितिष्ठ स्थानं वस्त न स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स लं नापदे कुः विषय या प्रीकृष्ण व्यक्तिया वि थायान्य वर्गः वस्तरम् मेहवीः विद्याना।दा। कुन रस्नामर्वकेस्किश्वनप्रधार न्नियद्र संस्कृतिकारि स्वानिकार स्वानिकार भडेरुपंग दीरमाइन्श्रम क्रिक्रिये क्रियम्भे प्रकांक्रिकाः आह्य कान्य स्थानिय विकास OF CONTRACTOR OF THE SECOND

सुनवापनाप भुरानः सुरूपिए हुउभ विकासारिहरू मार्थित है के स्वाप्त मार्थित मार्थित के स्वाप्त मार्य मार्थित के स्वाप्त मार्थित के स्वाप्त मार्थित के स्वाप्त मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्य मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्य मार्थ मार्य मार्य मार्थ मार्य मा प्रभावयान कर्मा जी धर भू सुनभू हा रेंक्यमें केवीर अमपाकर्षिक रिक्रिकारम्डवित स्थान्य मान मनुरुवनिविधित्त्वम्॥०॥सुर्भन्।। उक्ता राष्ट्रि स्वथ्य विभाग भेडवाउपाजकाराय अन्यः शरभागः युवि क्रामः मित्रकारकार मित्र में मित्रकार म उति भवनागण अहर मनर्गाय रा थवनेवटक्रवर प्रस्कृतिग्नाचे; पिनियः कानाल्य हुच स्थीर परामानः य िभानः स्वीत्र हिन्दि हिन्दिन हो।

कः मित्रमभागिति। यभगिति। यभगिति। वः स्वभभगिति। यभगिति। यभगिति। यभगिति। इत्र क्षित्रमभागिति। यभगिति। य

किरवयार हकः द्वावानः भक्षयानः न थवितिष्य इप्यवद्भागित्र भागान्त्र भागान्त भागान्त्र भागान्त्र भागान्त्र भागान्त्र भागान्त्र भागा मश्चमीच्यर शासाम्य द्वित्त महिन् अवन्त्रामवुलक्षित्रयहरिक्षभ्रम् स जीव पार या ले पार या राशित सामित्रको भाग्याचिति उत्या सुरुत्वेषम् हर्षे सुरमार्थ थः वहार किल्डिक किल्लिक किल्ला माद्रा विधान है। विधान में के कि उन्हें जा करें है। वि कवार न उपा म दे विधनाम द विकितं हैं रिष्यित्र के देशका भागवा के कार्य में प्रियमित िषवेल र भिजा मनुलंड क्रिय हिंभे ये ने ग म्भान-अनम्प्रभूपः भन्ना वरभानः ख द्वियं ता कि अनी अनी अक्त शाकार अद्रांत्रकामांग्रामा अद्रमक्चा भारति बेश्वालाक्षेत्रमञ्जूषिविति यह नाथ्येभाय भितिक्षेत्रहा वर्षेत्राचा चित्राः।।

व्यक्तिक विकार कि विकार में कि विकार कि मेवभाषानियः प्रचन्त्रस्थिता भः अशिने उद्यान् राष्ट्रमान् कर्मान् कर्मान् सः ण्यानियभूभः उद्वीतः भण्या स्वभूभ: उद्भाः उण्यो भाष्ठिति य उत्ताकवीउउद्धिन्द्र अस्त्राचि उ स्वक्ति प्रकारिकार्यकारिकार नुःइ द्यार सिम् वित्व करी उसे वक " मे उद्योच कु कु कु कु हुन विद्या में कालमीले वहनबीन्ड विस्ताउद्दर्भी मंद्रियक्ताम् विद्वाचनः विष्ठेता केथ्लग्रको न्या अवग्रह्म । अवग्रह्म । संबंधको नाम अवग्रह्म । अवग्रह्म र. लक्षावर्गातकाविकातिक के अम्मह व्यादिषिति विषय हें आपका रिकिया

र्शेत्रक्तं कर्भमारभाष्ट्रर्रेशिग्ड **्राक्षक्रम्बर्ड्डभदिवक्षक्राः**हर S. Eggs all My Child had and had दामिका न्या भेष र १ हैं। इस मार्ग पर भर्ग प्रमा मीप्रेग्डरवान्यवर्ष्ट्रामाग्डर्डः एन्ध वन धनी कपूर्व हुने व भूप वर्ष ३५५ स्थां नथप्रवः गिरेषं र स्थित मुद्राण उर्वेक क्षिण्यक्रेशिक में तर्वाः हवार उटाउट्सः एकभस्कीमः कियः भाद मुः निक्षपुः वर्षिमुः यदिमुः यदिन मः सथर्षभागाना भारतीर पार पार भारता उत्रमार्डि उथयह भारीद्वियालगाउँ पहुण्डे नित्रं मा के प्राची ना है के ने ति हैं। ठवित्र अस्त्र मीना उसार ने वर्षा भाषा अस् क्रिया मिल्ला मि म्यान्य माना THE RESERVE

रिएउरे भुका।।रिएए ये कु अनुष्या मन्द्रिः भुष्ठीय दे बाउति भुका ह विदेश या गानिः एयनण्या भाषाया हिस्सः भ्रकाकका रेयश्रह्या । अन्य प्रशासक्ष्राः नम् नेविद्य कराया प्राप्त भी भी किय स्था हो भेद दत्व ये से वे व के आ गारित थ निक्षितिय दिनियामण रेः जीवा किरिमानः क्षान्य निर्मायायाय भाष्ट्रमानि क्षान्य नक्षेकु अकार्यः विश्वास्थः स्त्रेशः मिला कार्या कार्या न लेशकिः इसीरेय अरम्यः उस्य स्कित्य विकाशकार्या विकाशकार किया किया है। ३भी उद्योग ० वक द्वां निक्य भूगा है विभग्रामा अवा अधिया के विश्वास्त्र के विश्वास वाउउर्विद्याः एषुः यक्तः निमः भेष वड्डिएश्वर के जाता। कार मा अपने मा अपने कार कि कि कार ।।।

कः

नभयम् अक्षुया स्थापम् ग्थाप् विद्रमञ्भयवर्भने क्षेत्रचा भदने अक्ष्मक अस्द है। यस अधुनं नभारती ने उद्घीवा से क्रोनिधानंश्वीतु मानी समिनिधानिल्ल भक्ग ब्रह्मका विद्युः अकार द्याः लकार क्षेत्रं का अंतर भी का भी मुभीक्भी काभी उसासी सक्षरभितिकारी म भिरम्भेर्वियान्यम्।।दा।व्यक्ष्ट्र् सिमिरेट से कर्डिड इंडिड कर कर मार्टिड दनंग्रा। वृद्धिन वित्व वृद्धभाग कि विविक्त दिस्त हए अवायं कृष्य - कृष्के - जी वा विषम शित्रो सूडिए भंग्निवते सिक्विड्गे सुद्वातः उटदने यनमण्डले यभ्याम यक्षप्या श्राम्य द्वारा द्वारा द्वार अगरे सार्वे स 5वः गयं उद्घीलामे क्रुगिभिन हर्वि चेनी रेगी हे जी हा जी इसी इसी सही हा जी यनगेणी सुयाभी सुयाभी गानी बुरियाणने मुक तिनतेषः **मह**ण्या तीदनेशुङ तिनशृः इङ् क्ष्मित्रमा।।दा।भिभिभिक्षिणक्षमा।।। मभामके उपायक भारति त्यामी भभाक र रहेमी विषं उद्घीन के के विशेषित स्वीर भंभनी भंपकी भंद्गी भंद्ग ने प्युक्त जिल्ल डें के शिवा मध्या कि की याः उभ्या नवहा नं स्थः भिष्म क्षित्र के या का विषय उभेड्रेक्सन्यनभागा।विमक्रउपयम्व क्रिम्धा । अवक्रम् मान्या भासक विषा में क्विरिभागःनथक रेज्ञ स्थित होत नयः एवं उद्यानम् क उतिभित्रहविशिष वेकी विक्री विभारी विकासी विनाभी वि नाथी।।द्या युद्धभव्यम् वभवयन्यम्भा।।। थमक्रियथप्रम्ग रेश्वामिसे कन वस्तु रू यानिक रथस्य बुद्धार्या का कि राधे द्राचीना में के उति स्थित अवित यम् वी युक्त सी युक्त सी यूक्त भी थ्राधी थ्रमाथी।।द्याधिक भाम दिः॥ पित्रमाद्री

क्र

40

उपयस्त्रणगरिक प्रकारी करल्या यह उद्योत क्षेक्षातिकविष्यिक्षात्रीयिकारी ।।।।। क्षिभग्दवस्वाक्षेत्र से विहेन्स्य । क्षिपयूर्वे न एपिक्षण वस्ट्रुप्यं वर्गम वर्गमी न दे हिवन्नग्रहः पिमाग्रेउपप्रमे उक्कीलंकेक उतिव्हवित्रमम् हिनिन्न पतिहापकः प विक्रिशीयविक्टकः यक्तिए योग्यास्कः थ विकासी भारा दिकः यहिल भी भारत करें भारत के वृत्रेथ्य द्र जनातिक दिभित्त सापार् नेक्स र विनिषे रुरुष्य भूषं वास्त्र।। नि कि कुरुषं दि भिदिभायं क्रिमउथउपये क्रिमुविकाण्येषा क्षिक्ष्यां प्रमान्य स्वाप्त्र विभवभ मन्द्रम्बर्गितिहे सिम्हे हिस्स कर्ते द्रात्र के सम्बन्धिक द्रात्ति प्रात्ते धमा मुनिक के विकास मार्थिक विकास मार्थिक विकास मार्थिक विकास मार्थिक मार्थिक विकास मार्थिक मार्यिक मार्थिक मार्थिक मार्थिक मार्थिक मार्यिक मार्थिक मार्यिक मार्थिक मार्थिक मार्यिक मार्यिक मार निरुकः हिंभकः क्रिमकः पायकः सन्वर्भ राउंघमा मित्रयकः नम्भित्यक्तिपुर प्रिमित्रार्ते भावकारक अधिवृह्ये व

मभूमतेपः वन्नक निर्नेपः उन्स्मरहेमः भानिभाउकः अविविधिप्रिक्ष निवस्वारी रेग्रेपचित्रमीक्रिमाध्यक्षितः विनमकः गुरुषकः सुभ्यकः यिनान भ्रानं घणची रिमी यः मस्मिने पः॥वा क है विदे ने में पश्चामिव विवन्त स्मामी ८ इस्माउपभागउपपच उद्यीना से कुर्जी इ ४विडि भूमी १ वें भूम के उसी नः भूम वकः पतिस्वकः सुद्रेमकः परिद्रमकः उपभाग अविके स्विच अस्त्र उना ॥ह॥ इकिमार मिनवा के हेयः॥ इंश्केट व्यक्त सम् उहः मन्त्रेष्ट्र मर्डिट हा सी नारे क्रियध्य चिक्वति है वनः केथनः नेष 4. र्भः भग्नरः कुधलः सत्यक्ष्रियलः सत्त्रतः कृथ 4. नःविधन मित्रणः मक्तानः हलनः मिरिणनः 43 क्षानः वस्तः हाथलः वस्तरः कृष्के प्रमुध

न्यतियदिभागः भिक्षप्रयोज्ञयन्य इ उल्यासक्यान क्रियमनन ट्विंधक्यान भद्ध-भुन्न मन्त्र मश्च मश्ची द्रया यो कला म प्राजः नुणानामान्यणान्यः क्षावाह्य न्त्रेत्रव्रायं क्रिक्थन्त्रयं व्यापन् मकायन्गानमारे मुशुद्ध नारे:।।नमारेण्डे: वृद्धियम् हे उस्ति विक्रमा है । उउद्वीनःरोकनः वातः ववनः क्रानः रूपनः वदनः नमन्द्र तिरिक्षिण गुरी हे ५ उपना र्ष्यु निर्मित कि कि कि कि मान मान मान यमस्थरन्य भूभ गिष्ठ असुमं मादल भेट्रिण रुक्षथम विक्रियम्भगरो राजि महीिय उन्ने अभि देश का किया विविद्या का प्रमिक हु यं इन सी ये मुममे के गरे थं उद्यीनाचे कारिय्यु द्विंडवी एवनः मर् भनः एक्भनः भरनः चनः द्वनः मेमनः॥दा।

नयानुभुक्ति। प्रक्रीक्षभाग्यक्रमनुन्यं भ्र मका की धारी के मी का भेग्यू राये।3 म्हालकेकानिय नहिवानिसम्हें मुरिपू थः अधिरक्षिरक्षिरक्षाम्बुउक्रमा योवियनने श्रीकर की थिए की किए।।हा म्क्भगभद्दवयम् अन्यस्यर्थस्य कृष्णाम्भद्रभायां क्षक्तं ग्रमुगारिप दिभाग है: यु धसमान इस उप्ये पुरारित र्गुन्नथक ने पहुंग नि थर गरेग एपं उम्हीनामिक गुरियक गारिक मानकः क्षिकः स्वापकः भारतः वः वाद्वः हिष् कः उपभाष्यकः स्वयं प्रस्ते व्यक्ति स्वयं क्रथा उकः थान्यः॥का। किष्डिति एसिनि 平 司· उद्वाकः।। रुप्तावान् किनायम् चार्य रुगंगिनिस्मिन्द्रिये उ 43 वेः प्रयोग सीता के का में भारत प्रयोह बी

धक्राः धन नवस्टि रजः वगक्रीकियां कीर न्तकी नक्षकी उद्विणा गृह्म भवे रिना।। पलभेर्ण उः प्रान्य मनयः धमक्रा पप्रदेशका के कारिए यू टिये विति यस्यी यसवी ग्रन्थाक।।स्त्री स्विकिवित्य विक् वभावमार्सिमानिसम्बद्धाः नुसरिक्षिया कितिया भगदिविषिक गिवा दिसाँ के विस्व द्राउष कि मा सवाये विध वः कुभग्रयं परिथवः इयभग्रामान्य वृष हयमलनयः नकुवः सभगिते सिक्षियः ए षंग्रसीनामे कारीय स्ट्येंडवित रायी मुख्यी मरी द्वायी विम्यी परिक्वी वभी म वृत्ती महली।।द्या कियाकि गिर्मितिक उद्भुष्ट्रम् नः।। स्थलनगाि उक्स भपस्य ने गडग्डन भादनं भाषं मणक युक्तिन्ते प्रानुष्यांगिते में साथ जीवान उ हुवे मारा

वित्रमात्रा उद्यस्त्रभी कुणानिकारण च्ये:म्युचः छड्डान्येन क्रिक्राने सन् थ्रयेडवित्र म्यानः यम्पानः ग्रहयनः भारयानः निम्नः उस्नः सम्नः थक विनेशक्ते:उपक्रमीयाक्ष्येश्च ग्रमुन् उभवपदयान् में मिति उन् उन्बाधिकता विभावस्याना मी देश हो मा भेड़ा भी देश क्षेमग्राष्ट्र अस्कृतिकृतिक निविधि मी उ नभद्र भी उनः उप्रनः॥ह॥मिरिभिष र्गिति। अक्टू सण्डन पहित्यम् लक्षेत्र क्षामा भारत स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स् लाकोकाति सम्देश कवित्रम् सम्हः हारः कर्मनः ।।क्षाम्भ्रीय असे भगका॥भ्य भाभान् सरक्षान थानि भेग्द्रण उः रा थम भाउद्वीनासे क्राप्तिमाक्ष्य द्योद्वितिक क्रियक्षकाऊ: भागित भाभक नारित स्तिनः सम्बन्धः भक्षाः॥क।।

मिनिट का अवद्यां भारति भित्री में दन का अपनी पुंच्हेरीभार्ने लक्षेत्रपार प्रक्रियी लक्षित हरे में के के जिल्हा के कार के किया है के लिए का म् अक्कीनके कारि हते अका कारियाहरी विमम्यः हम्माउ ज्याद्यस्य व स्वात्र म्यान व क्षुवः॥द्यादिविक्विकितिक्षाः क्षुव किक्र गविकारल कि कि समिष्ठी कर लाग ये ज्ञाभुर्येडवीउविक्तःक्रुप्तिकितःक्रम क्राविक्षिवशिवन्यः भणलिक्षंधिवः िए उ उन्ही लिभि अस्यमिक याने कम यमिकित्रजीरकः क्रीलमेकिनं यथिः किन्छि उन्हीनिभट्यः नीयस्भिद्धमार्थस यस्विद्वस्ति विषयिर्घितित्रभूणभः किमारेष्ठि निष्ठ उस्ती तर्र हे तुः॥ह॥हग्र कः॥हग्रिक् केंच्यरभाग उद्याना देक मुक्र प्रयोक्त वित स्गुकः।।ह।।क्रिसियानु कं प्रोत्स्रिम विवस्त्रभावस्ट्रवरम्भम् उक्रम्मन्वपूर्प अन्य द्वादम्य वस्य दुर्यं वं क्रियं के द्वीय अनुमें उद्यान से कड़िक क्षेत्र कि विश्व कि विष्व कि विश्व कि विश्व

वर्ति उद्यालिय व्यक्ति गरितं स्था उद्यक्ति एक्ष्यकः नप्रमद्भवति व्यवप्रः एपानी ने व विमह्भभूनभागः अध्वन्वना वः ०वि वता वः एवं मन्युकः सर्वे वस्ति व वक्षः मभूमतिपः पशुनतृतियनिपःयिक्तित्व भभूमीके न गमित्र सीकाः।।पाउभून्य पिता।।। उश्वेषीियउभ्यानियन्त्र प्रविष्टिक न्तानिक स्वाप्यः भनी स्थापः भनी स्थापः भनी स्थ रः भटें अपि किलंभारी यमयः मा प्रमान्ड भविषिहिने प्रविवित्तनित किनाउँ भने के मनोकि छिह्न पका भूटे वस्त ल निष्ठा वास्तु भाकिक है नवा उने थ सर्ण उक्प के उस् न मह कर वः॥ हा। १३३ यं ज्यारः॥३३ भुम्। मात्रा च सीय गत्र अ या उः या भूगाना विश्वासामा अवस्था वा प्रयोद्या याया वरः क तिनं या छ उसी ते ग 23कि रिन्यमन् अस्ति स्थान न्य हर्मात्यः सन्तरकः स्थानियः श्रेः हात्र्वेशाता। किलिंगित्रम् राष्ट्राम् मान्याम् विभागित्र

मसनयेः पिरान्ते कथानी पुरांमाम् द युगिऽनिच्डें भद्रीदर्भ भू भवः विषाउद्धी नाद्रे का का अध्येष्टियाँ क्रमाः पे भारः क्षाः व्यान्त्र वरः यमहुरः॥द्या भद्रतिप्रमा त्रभं श्रुरपार्यिक विशेषक गां भ्रथ्या है: कक्रियक्षक्षा कुः पक्षित्र कार्रे भेरे दि कु: अरहा: अरहा दिन हैं ने कि कि के कि कि कि कि वृत्री नवुरःन व्यतिक्षानुनं जाने भेनु॥वा। मभ्याम्य अक्रान्य न्या अक्रमान्य निष्या क्रीपि,केषुर्भिक्षिकिष्ण, विभाने वार रागा मीपीमीपुरिक्षिणत्त्र सभेक्षा वाष्ट्र चेः दिशिदिभाषाक्षमकानु विभाषां वे भन नमध्राद्वेहाव उद्घीसाने काति व्याप्त च्विति सी युः कृष्ः यद्भं दिभ्ः कृषः प्रचित्रार्भ्यः।। भन्न मेनिकिस्।। भनेत्रेष्ट्रणात्रः मुद्रवध्नमुभुगविद्रभक्ष

याम्याभटभ्उम्नानाचे कुनित् भ्रेचेवन रिक्रुभिक्षिम् कीद्वः सुवंसः किष्वः॥दा।। विद्युमानि सुलकुल देने निया दन वि मिन्सवयवे लक्ष्य स्थानन र भ्रेयः नक

कराभन्न प्रसः म भूकः विथा रहे कि स्प्रकः।।।। उद्यन्तेपण निधनं कि हुम। अक्न उपनंद वन्तर कुरां मण्युना उथणलियां येषंभ्रधकतिथे गभइवित्र अर्- अर्ड देव म उस्तीना रोक वृशिक प्रश्विक की गर्या विचमनं महत्रीर युक्रा मन्त्रं यहाथिः भेभं क्रिद्राः। भाषाने मुक्ताकारमन निकः विच्छ्यः स्तेपेभवणाक्ष कः वन्तानायवा बचिक् वरं किः विव छ सकारदकभूउधण नेपिनं यदा त्र रक्षिटेकरक्षिकरंद्धिश्वाद्वायात्रक विश्व अयं निष्या । निष्य अपियं भाषा

वधुम् सन् निष्धानयन मापं उद्योगलेक उति निर्ण विशेषक्षेत्र एक बार्श का राज्ञ रञ्जः रश्रमार्थाकाभाषाम् विश्व हर्ष भजः॥स्विभायं यक्तिस्विक्त्मान्यु देः स्रष्टेण्डी सम्मेकाति सुन्ध्य विठयी अस्मानः। ॥ कियम स्कृषामिक्त हच ७ दर्श उस्क्री नामे क उतिमकानकाठवित्र हीमः हीमः॥ नामिस् क्षेत्रहेशक्षमाहित्रक्षेत्रक थानम्प्रालचिः वृत्ती विभाषाभा उत्ततस्यलन अपासु रेग्यावधवः इ उद्योपे इस्था मीपे मधा किथुवाडीवरूषा भः उर्वे भण्मृद्द्रता पः रही प्राविष्ठवलियः अको गूर्वान्त्रभुगीउग्रवभुडाङ्ग हाः।।व।। इति। गर्मिमा इति प्रार्थिक स् नयः दिशासिचमनं ठविता क्रिइत्रापृतिषा प्रेष्ट्सस्तिसम् धगा यामभिभित्रित्रमां क्राविष्ठिभनियः णाउँभेतः॥ताक्विम् वि, मं प्रेष्ठा॥॥

वित्मेत्। गयद्यपक्ष वज्ञभु अञ्चल विरम् नु पूर्य ठवीउ विदु: सभु: यहु:॥व्याक्रमीमाव्यः धूना॥ वेटाथने उस्माजा के बट कि वे स्वाउ पेका गंथ्रया के जी यह जा हिला है निका कर वने भिष्ठिकसुर्धकाचा उपाउट व्सिपिनिय उउनका केवेक र उशाकानिक अस्यय स्यापिक विकास भिम्भिर, भउ। महान्यः क्रान्यानी माध्या रुपान्य समार्था मा माभम् प्राप्ति गर्गा वेषा भुतः उम्यूष्ट्रन् । पाना व उत्ति भग का न भिद्रसम्ब भट्ट ता के सम्बन्ध मन् भद्र वहने महः करले हेस् रूचे विविधिती माउने ने स्थाय यदिनम्मार्भागवंनभ् यदेवक्रिन्दे मंद्रं मंद्रं निक् दिन्थ्यक्ष्यक्ष्यक्ष णः उभाउवताषाचिति उपस्थान् व्यापः भार् रेष्ट्रें कमज्ञी सभूभःउवनथली उभूटः य क्षित्रहरूपी ग्रही नदेवः भारत्विति अभूगः

₹.

प्रदेशिस उडिं भी अपना विकास से कि ती पूर्यः । गापलभकर यो भवः।। भगभवने ४ ट्रम् ५ ५ द्व गल हे मुखवीर उन्नेक रेल दल भकर ये सम विकारि दलभेषेर् अक्सू धेर्मणिस्या। मित्रवाडिक क्षेत्रकारिक किल्ल हो। षाक्रमने अधिपुनने प्रपूरणायन मवस्र ने धदभरलामगर्भः ग्रहःकुरल कुर्राष्ट्र ये व्यात्रमात्रं निवद्णवरं भीवरं त्यित्रं। सिर्दे सिरिडे । हिर्म सिर्दे । योग्यम्य ८ इभ्र में स्विश्व धरिव इसी गा।।। प्रिक्रवडम् सक्तुविग्ययः कार्के द्र्या येठवीउ प्रभायिक इस्व इयं मार्थवरः एषिः पविद्रम्भिः यः भूज्ञभभन्य उभाः उ ५ ने में ह्यां व हिंगे । जा कि नव ने भी निम् अरु छेह मुजः॥किक्ल वस्त हिण उहेभ इउद्देश हैं है है अह उद्देश कर है विकास कर है ।

केउ दे इं इंडिड के द्वार भिन्द्र विभिन्नः इंडिड डिए हु: विविधिकी ते: भट्यानं यवा गृह्मेतः गहित्रमुः गङ्गेप्रील उः तिम्य पाप्र गहिति। राचेदनीक्यश्रीसीयुग्भनक्षत्रभग्रान्तुर अध्यक्ति ।। ज्यानि ।। ज्यानि ।। ज्यानि । क्राले वेस्पंत्म हे उठः सी गुरवेन भः॥धा विउक्त बिकुरिया कारे: वर्गन करते उठम्यः प्रयः हविति कुउपुत्री उ थिए हे कु न दिन मान वामी दिवायुः A PARATY मीतिं मम्हिमां इसा दाप वर्ग्य मिर्मा क्या अहराजाादा किथि विश्वास्य यः भीराम्यः मग्नः प्राम्यः क्षेष्रिक्सभा ण्येकवानुभ्रच- कुउवन्यम् भूभः ग भिष्ठिति वाभी ग्रमभागम् विभिन्नि अनी 2: 43 सगानि मारिः सिर्मा कुरिया है। म्वित्रमनिक्षस्य वास्त्रीपणित्रीयः

यसुम्जीक प्रभाषािक प्रमुः अजीवः निम्मू भुयीकविष्ट शिक्ष विक्वे से विक्ये से स्व दशक्ताम् :गभी, मुगभी हावी प्रशुप्यी प्रवा यी प्रितेमें रामचेराभामयः।।जानुष्रभेगी या योगी या कु या भाषि या कु यो दिया या भाषपम्ब उच्चे णडेः हविषु विक्निव उभूर्येन्व उः भाषकेषूर् कि. भक्तं व्रहे मुख्रतिक्यायाः धमनिक्याप्रभामभा दिया सिनि कि कि सुरिद्ध किया है याभितिकं भित्रभृति एवउसिम सः मुर्ण वनित्या हवाँद्व थयमंन उपउनित्या गुगावा डाववाकिरम्। द्वियागुयंदियायाभ्यथम् उण्येणि ते किया विश्वास्त्र के विश्वास्त्र भेट क्वित्रियाका श्राम्य स्थित सम्माय विश्विष्ठ य व्र दि।।जाक्माना ।।क्षिय मुयं हि याचाभध्यस्कुरायं क्रमीलक्रथपराण देः हिष्टु काने मार विशेषाचे ब्रह्मिक क्षा मारे वृह्मिशा हा। मक्छि भूभो दि उन्में बेमाए उह लि बृष्ठिक ले भूमन भोरिते मनुलसुनमाध्यो हवा हव उः दि किर्मित्रकिर्काक्ष्मिल्यक्रियं उथक्तिष्ट्र नाउथक्तिष्ट्रभाग्ने इतिकृ गभः॥कार्थम् विम्य स्वितं व्यक्ती।। यम्पद्री। मरिहत्ति, विमर्वे विमन् स्थान अस्थान उस्तान वि प्रथं क्र प्रियम्मा ठविष्ठ थ क्र प्रभागित विष्यम् विमित्रवेमः।भीमतिभागः उमृति उकः॥ह॥ म्: भिरवृष्टिः॥ अग अविद्याम् भिरवृष्टिमा उपनारुवाउभागः भिरूप्टकः स्त्रीभाग्यः िः उथभनभूषात्रवर्षे वहलिभि १३वृत्व म्डेरीकः भव्यत्नयाथाश्रुविभागेभवः णि री जन्मकांमवनिष्ठः॥द्यानिष्ठा णः हार्यभाववित्राथकः हुगः मगः॥दा॥ मक्रातमक क्षेश्र कामाणि उनका क्रिक डेका के कमा का विक्रिय भारत कर कर कि

平。

QY

यंविषय धुउनित्रभागि एक रः भागक र येः निरुभए भेडे धूम सुम्माद्याः मकार्वित निर्मिक्रवृक्तः करलीयः।।जासन् व्यास्त भान्ता भवभा कुरि डे छ व सक्र तिसक्र व क्रमिक्वियाभार्णगामुभानेपाद्विति मभंहिउमुग्धः मक्भुद्धलिष्ठाः हेपु यिनय के परिभान्त कि विश्वयः।।।।। ल्ल्ड्नाष्ट्रचन्ड्यन्ड्याअक्र नुमुण्डेपाठ्ठवित्रारुवित्रक्ष्यक्रित्रक्ष क्रियणीयाँ भागायण यः भीयाँ भयः म्रष्टवभीचित्रम्रष्ट्वभाघः॥वात्रथभने नवः॥न्मच्रिष्ण्यम् जाउथभतिउथश्री थाह्वाउँ व के उत्तरक्षक भागवः व किरावः धरिरावः अपभारि रिविश्वः॥दा। अभि, स्वः॥ अम्बद्धियथ्य एष् उथउप्पेर ट्याजा भाष्ठ्वित सम्य उत्तिम् ना सम्य वर्वमिक्र आयिभिम्लाम् गर्भे सक्र उद्य

व्याप्रथान्यानुविष्ठभंदाःवः उद्यावः भेतृतः उद्युवः।।।। सिक्लिक्ट्रियभने॥सिक्सवयं न्निपाध्यम् ज्ञभउद्यं गर्थः स्वर्भम्त्र्य भनेविनाधानुवीअमूयः नयः कावः मन्यभ निरिक् अस्यः भूलमः भीरुवः॥पृष्ठिये।। पदान्ति म्या देश महाविम द्रियम प्राप्ति वि विकायः विम्यः॥का। श्रम्भ प्रचने नक्।। विनद्भ उपप्रतिभुवाद्धाः निज्युस्ति । थ्रभाने, यह भृषिभुग्यः का दुस्विभुग्यः समग्र लिशिक्षक के विभागाः विभागां के किल्लिक किलिक क इसी मधीठ विवेध थयद भाषा कार ने देशा अपनिवाद विश्वार थाति केताः कर्मनथी वि उत्र तक अस्त्रीया स्टिस् स्वाप्त माथ्म के क. उपयस स्माजेष्मा मुजेमहे भाषा हवीं वं धर्वास्मावः। ध्रम्यः युक्तिविद्यास्यः ८. भेशुषः मृष्ठिभवः।वानियविकः॥स्वउत्राच उद्येनथयक्तयेः लीजायापनिकर्भागायाद्वरि म्यनच्यः उत्रम्यः॥त्।